ताजमहल
तेजोमहालय शिव मंदिर है

पुरुषोत्तम नागेश ओक

ताजमहल:
तेजोमहालय शिव मंदिर है

लेखक : पुरुषोत्तम नागेश ओक

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 05

मूल्य 11.00
प्रकाशक हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
email: indiabooks@rediffmail.com
फोन 23551344, 23553624
फैक्स 011-23553624
संस्करण 2007
मुद्रक संजीव आफसैट प्रिंटर्स, दिल्ली-51

प्राक्कथन

सम्भवत: जीवन में एक बार भी प्रवंचित न होने वाला व्यक्ति कोई नहीं है, परन्तु क्या समूचे विश्व को प्रवंचित किया जा सकेगा ? यह असम्भव प्रतीत होता है। फिर भी सैकड़ों वर्षों से भारतीय एवं विश्व इतिहास में की गई हेरा-फेरी से समूचे विश्व को ही धोखा दिया जा रहा है।

विश्व का सुप्रसिद्ध भवन आगरे का ताजमहल इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। निजी समय, धन एवं कष्ट का व्यय सहते हुए ताजमहल देखने के लिए विश्व-भर से हजारों पर्यटक आते रहते हैं, परन्तु ताजमहल के निर्माण के सम्बन्ध में उन्हें धोखा दिया जाता है। वास्तव में उन्हें यह विदित कराना चाहिए कि ताजमहल इस्लामी मकबरा न होकर 'तेजो-महालय' नाम का एक शिव मंदिर है जो तत्कालीन राजा जयसिंह से पंचम मुगल सम्राट् शाहजहाँ ने छीन लिया था। अत: ताजमहल को शिव मंदिर की दृष्टि से देखना चाहिए न कि एक इस्लामी मकबरे की दृष्टि से। दोनों में आकाश-पाताल-जैसा अन्तर है। कहाँ कब्र और कहाँ देवालय ! जब आप इसे इस्लामी मकबरे की दृष्टि से देखते हैं तब इसकी महत्ता, वैभव और सुन्दरता निरर्थक एवं निराधार लगती है, परन्तु ज्यों ही इसे एक मंदिर की दृष्टि से पर्यवेक्षण करेंगे तब आप निश्चय ही इसकी परिखाएँ, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, भवन के विविध दालान, झरने, फव्वारे, शानदार बगीचे, सैकड़ों कमरे, कमानों से सज्जित बरामदे, चबूतरे, बहुमंजिले-महल, गुप्त एवं बन्द कक्ष, अतिथिशाला, अश्वशाला, गौशाला, गुम्बद पर और वर्तमान नकली कब्र कक्ष (जहाँ कभी शिवलिंग होता था) की बाहरी दीवारों पर खुदे पवित्र ॐ अक्षर की ओर दृष्टि डालेंगे ही। इसके विभिन्न प्रमाण अधिक गहराई से अध्ययन करने हेतु पाठक पी० एन० ओक की पुस्तक 'ताजमहल मंदिर भवन है' पढ़ें। इस पुस्तिका में हम उस सनसनीखेज ऐतिहासिक शोध को संक्षिप्त मुद्दों के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

ताजमहल : तेजोमहालय शिव मंदिर है

१. ताजमहल नाम का उल्लेख औरंगजेब तक के किसी भी तवारीखों में या दरबारी दस्तावेजों में कहीं भी नहीं मिलता है।

२. इसे ताज-इ-महल याने महलों का ताज कहने का प्रयास करना हास्यास्पद है, क्योंकि यह तो इस्लामी कब्र है। कब्र को कभी महल नहीं कहा जाता।

३. इसका अन्तिम पद 'महल' इस्लामी शब्द ही नहीं है, क्योंकि अफगानिस्तान से लेकर अलजीरिया तक फैले विस्तृत इस्लामी प्रदेशों में 'महल' नाम की एक भी इमारत नहीं है।

४. सामान्य धारणा यह है कि इसमें दफनाई महिला मुमताज़ महल के नामानुसार इसका नाम ताजमहल रखा गया है। यह दो दृष्टियों से असंगत है। एक बात तो यह है कि शाहजहाँ की उस पत्नी का नाम मुमताज महल नहीं अपितु मुमताज-उल्-जमानी था। द्वितीयत: मुमताज की स्मृति में बने उस भवन को नामांकित करते समय दो आद्य अक्षर 'मुम्' उड़ा देना हास्यास्पद है। एक महिला के नाम के आरम्भ के दो अक्षर हटाकर शेष हिस्सा इमारत का नाम बनता है, यह किस व्याकरण का नियम है?

५. फिर भी उस महिला का नाम मुमताज होने के कारण यदि उससे इमारत का नाम पड़ता तो वह इमारत ताजमहल कहलाती, न कि ताजमहल।

६. शाहजहाँ के समय भारत में आए हुए यूरोप के कई पर्यटकों ने इस भवन का उल्लेख ताज-ए-महल नाम से किया है जो शिव मंदिर सूचित करने वाला संस्कृत शब्द तेजो महालय का बिगड़ा रूप है। स्वयं मुगल बादशाह शाहजहाँ और औरंगजेब के दरबारी दस्तावेजों

में या तत्कालीन तवारीखों में ताजमहल शब्द का उल्लेख भी नहीं है, क्योंकि तेजोमहालय उर्फ ताजमहल संस्कृत शब्द है।

७. कब्र का अर्थ विशाल इमारत नहीं अपितु केवल इमारत के अन्दर स्थित मृतक के शव पर बना टीला होता है। इससे पाठकों को ज्ञात होगा कि हुमायूं, अकबर, मुमताज, एतमाद्-उद्-दौला, सफदरजंग आदि व्यक्ति हिन्दुओं से कब्जा किये हुए विशाल भवनों में ही दफनाए गये हैं ?

८. यदि ताजमहल मकबरा होता तो उसे महल नहीं कहा जाता, क्योंकि महल में तो सजीव व्यक्ति ही रहते हैं।

९. चूंकि ताजमहल का उल्लेख शाहजहाँ तथा औरंगजेब-कालीन किसी भी मुगली लेखों में नहीं है, ताजमहल के निर्माण का श्रेय शाहजहाँ को देना उचित नहीं। उन्होंने ताजमहल शब्द का उल्लेख जान-बूझकर इसलिए टाल दिया है क्योंकि वह मूलतः तेजोमहालय ऐसा पवित्र हिन्दू संस्कृत शब्द है।

मंदिर परम्परा

१०. ताजमहल संस्कृत शब्द तेजोमहालय यानि शिव मंदिर का अपभ्रंश होने से पता चलता है कि अग्रेश्वर महादेव अर्थात् अग्रनगर के नाथ ईश्वर शंकर जी को यहाँ स्थापित किया गया है।

११. शाहजहाँ के पूर्व समय से जब ताज एक शिव मंदिर था तब से ही जूते खोलकर अन्दर प्रवेश करने की परम्परा आज भी मौजूद है। यदि यह भवन मकबरा ही होता तो इसमें प्रवेश करते समय जूते उतार देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती बल्कि कब्रस्तान में तो जूते पहनना आवश्यक होता है।

१२. पर्यटक देख सकते हैं कि संगमरमरी तहखानों में बनी मुमताज के कब्र की आधारशिला सादी सफेद है जबकि पड़ोस की शाहजहाँ की कब्र और ऊपरले मंजिल में बनी शाहजहाँ-मुमताज की कब्रों पर हरे बेल-बूटे जड़े हैं। इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि वह सफेद संगमरमरी शिला मूलतः शिवलिंग की आधारशिला थी। वह अ

भी अपनी जगह पर है और मुमताज वहाँ दफनाए जाने की कहानी कपोलकल्पित है।

१३. संगमरमरी जाली के शिखर पर बने कलश कुल १०८ हैं जो संख्या पवित्र हिन्दू मंदिरों की परम्परा है।

१४. ताजमहल के संगमरमरी तहखाने के नीचे जो लाल पत्थर की बनी मंजिलें शाहजहाँ द्वारा आबड़-खाबड़ चुनवा दी गई हैं उनमें से कई बार पुरातत्वीय कर्मचारियों को मूर्तियाँ मिली हैं। दरारों में से अन्दर झाँकने वाले व्यक्तियों को अन्दरूनी अँधेरे दालानों में मूर्तियों से अंकित स्तम्भ भी दिखाई दिए थे। ऐसे कई रहस्य सरकारी आदेशों द्वारा गुप्त रखे गये हैं। सरकारी पुरातत्व कर्मचारी तथा अन्य पुरातत्ववेत्ता, ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करने के अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हो पर्यवेक्षण करने के बजाय, इस सम्बन्ध में विचार-पूर्वक, सभ्य तरीके एवं कूटनीति से चुप्पी साधे बैठे हुए हैं।

१५. भारतवर्ष में बारह ज्योतिर्लिंग अर्थात् मुख्य शिव मंदिर हैं। यह तेजोमहालय याने तथाकथित ताजमहल उनमें से एक है, क्योंकि ताजमहल की ऊपरली किनारे में नाग-नागिन की आकृतियाँ जड़ी होने से लगता है कि यह मंदिर नागनाथेश्वर के नाम से जाना जाता था। शाहजहाँ के अधिग्रहण के बाद से इसने अपनी हिन्दू महत्ता खो दी।

१६. विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र नामक वास्तुकला के विवेचनात्मक प्रसिद्ध ग्रन्थ में उल्लिखित विविध प्रकार के शिवलिंगों में तेजोलिंग का उल्लेख करता है जो हिन्दुओं के आराध्यदेव शिवजी का चिह्न होता है। वैसा तेजोलिंग ही ताजमहल के अन्दर प्रतिष्ठित हुआ था। अतः यह तथाकथित ताजमहल तेजोमहालय ही है।

१७. आगरा शहर जहाँ ताजमहल अवस्थित है वह प्राचीनकाल से शिव-पूजा का केन्द्र रहा है। यहाँ की धार्मिक जनता श्रावण मास में रात्रि का भोजन करने से पूर्व पाँच शिव मंदिरों के दर्शन लेती थी। पिछली कुछ शताब्दियों से आगरा के निवासियों को बल्केश्वर, पृथ्विनाथ, मन-कामेश्वर और राज-राजेश्वर इन चार शिव मंदिरों के ही दर्शन

से सन्तुष्ट होना पड़ रहा है, क्योंकि उनके पूर्वजों का आराध्य पाँचवें मंदिर का देवता उनसे छीना गया। स्पष्टत: अग्रेश्वर महादेव नाग नाथेश्वर ही उनके पाँचवें आराध्य थे जो तेजोमहालय अर्थात् तथाकथित ताजमहल में विराजमान थे।

१८. आगरे की आबादी ज्यादातर जाटों की है। वे भगवान शंकर को तेजाजी कहकर पुकारते हैं। इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इण्डिया, २८ जून, १९७१ जो जाट विशेषांक था, कहता है कि जाटों के तेज मंदिर होते थे। शिवलिंग के विविध प्रकारों में तेजोलिंग भी एक है। इससे स्पष्ट होता है कि ताजमहल तेजोमहालय अर्थात् शिव का विशाल मंदिर है।

दस्तावेज के साक्ष्य

१९. शाहजहाँ का दरबारी वृत्त शाहजहाँनामा अपने खण्ड एक के पृष्ठ ४०३ पर कहता है कि अतुलनीय वैभवशाली गुम्बदयुक्त एक भव्य प्रासाद को इमारत-ए-आलीशान वा गुम्बजे (जो राजा मानसिंह के प्रासाद के नाम से जाना जाता था) मुमताज को दफनाने के लिए जयपुर के महाराज जयसिंह से लिया गया।

२०. ताजमहल के प्रवेश द्वार के साथ लगे पुरातत्वीय शिलाओं पर हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं में लिखा है कि मुमताज की कब्र के रूप में शाहजहाँ ने सन् १६३१ से १६५३ तक ताजमहल का निर्माण करवाया। किन्तु उक्त कथन में किसी ऐतिहासिक आधार का तो उल्लेख ही नहीं। यह उसका एक बड़ा दोष है। दूसरा मुद्दा यह है कि मुमताज महल नाम ही झूठा है। मुगली दस्तावेजों में मुमताभ-उल्-ज़मानी नाम उल्लिखित है। तीसरा मुद्दा यह है कि ताजमहल निर्माण की अवधि जो २२ वर्ष कही गई है वह मुगल दरबार के दस्तावेजों पर आधारित न होकर टॅव्हरनिए नाम के एक ऐरे-गैरे फ्रेंच सर्राफ के कुछ ऊटपटांग, संभ्रमित संस्मरणों से निकाला गया निराधार निष्कर्ष है।

अन्य प्रमाणों का विश्लेषण करने पर टॅव्हरनिए का कथन

गलत सिद्ध होता है।

२१. अपने पिता शाहजहाँ को लिखा औरंगजेब का पत्र टॅव्हरनिए के दावे को झूठा साबित कर देता है। औरंगजेब का वह पत्र आदाब-ए-आलमगिरी, यादगारनामा और मुरक्का-ई अकबराबादी (सईद अहमद, आ. रा. स सम्पादित, सन् १९३१, पृष्ठ ४३, फुटनोट २) में अन्तर्भूत है। सन् १६५२ के उस पत्र में औरंगजेब ने स्वयं लिखा है कि मुमताज की कब्र परिसर की इमारतें सात मंजिलों वाली थीं और वे इतनी पुरानी हो गई थीं कि उनमें से पानी टपकता था और गुम्बद के उत्तरी भाग में दरार पड़ी थी। अत: औरंगजेब ने स्वयं अपने खर्चे से उन भवनों को तत्काल मरम्मत करने की आज्ञा देकर शाहजहाँ को सूचित किया कि यथावकाश इन भवनों की व्यापक मरम्मत की जाए। इससे सिद्ध होता है कि शाहजहाँ के समय में ही ताज इतना पुराना हो गया था कि उसकी तत्काल मरम्मत करने की आवश्यकता पड़ी।

२२. दिसम्बर १८ सन् १६३३ के शाहजहाँ द्वारा भेजे दो पत्र (फर्मान्) महाराजा जयसिंह के कपड़द्वार नाम के जयपुर दरबार के गुप्त विभाग में सुरक्षित हैं। उन्हें आधुनिक क्रमांक १७६-७७ दिये गये हैं। सारी सम्पत्ति सहित ताजमहल का शाहजहाँ द्वारा अपहरण किये जाने की अपमानकारी घटना उन पत्रों में उल्लिखित होने से जयपुर नरेश की असमर्थता छिपाने के हेतु वे पत्र गुप्त रखे गये।

२३. राजस्थान के राजपूत रियासतों के ऐतिहासिक दस्तावेज बीकानेर में सरकारी अभिलेखागार में रखे गये हैं। उनमें शाहजहाँ द्वारा जयसिंह को भेजे तीन पत्र हैं। एक चौथा पत्र भी भेजा गया था ऐसा उन तीन पत्रों में से एक में उल्लेख है। उनमें जयसिंह को मकराने के संगमरमर तथा संगतराश भेजने के लिए कहा है। सारी अन्तर्गत सम्पत्ति सहित ताजमहल हड़प करने के पश्चात् उसमें मुमताज की कब्र करने और कुरान की आयतें जड़ाने के हेतु शाहजहाँ जयसिंह से ही संगमरमर तथा संगतराश मँगवाने की धृष्टता कर रहा था। यह देखकर जयसिंह को बड़ा क्रोध चढ़ा।

उसने न ही पत्रों का कोई उत्तर दिया और न ही संगमरमर या
संगतराश भेजे। इतना ही नहीं अपितु संगतराश शाहजहाँ के पास
अपने आप भी न जा सकें इस उद्देश्य से उन्हें बन्दी बना डाला।

२४. मुमताज की मृत्यु के लगभग दो वर्ष के अन्दर शाहजहाँ ने संग-
मरमर की माँग करते हुए जयसिंह को तीन आदेश भेजे। यदि
वास्तव में २२ वर्ष की कालावधि में शाहजहाँ ने ताज निर्माण
करवाया होता तो १५ या २० वर्षों के बाद ही संगमरमर की
आवश्यकता पड़ती न कि मुमताज की मृत्यु के तुरन्त बाद। बना-
बनाया ताजमहल हथियाने के कारण ही मुमताज की मृत्यु के तुरन्त
पश्चात् शाहजहाँ को उसमें कुरान जड़ाने के लिए संगमरमर की
आवश्यकता पड़ी।

२५. इतना ही नहीं, इन तीनों पत्रों में न ताजमहल, न मुमताज और न
उसके दफन का कोई उल्लेख करते हैं। उसकी लागत एवं पत्थर की
मात्रा का भी उनमें उल्लेख नहीं है। ताज को हस्तगत करने के
बाद कब्र बनाने तथा आवश्यक मरम्मत के लिए कुछ थोड़े संग-
मरमर की आवश्यकता पड़ी। क्रुद्ध जयसिंह की मिन्नतें करके प्राप्त
होने वाले अल्पस्वरूप संगमरमर से ताजमहल जैसी विशाल इमारत
समुच्चय का शाहजहाँ द्वारा निर्माण वैसे भी असम्भव था।

यूरोपियन पर्यटकों के वृत्त

२६. टॅव्हरनिए नाम के फ्रांस के एक सर्राफ ने अपनी यात्रा टिप्पणी में
उल्लेख किया है कि "शाहजहाँ ने मुमताज को ताज-इ-मकान के
निकट दफनाने का कारण यह था कि वहाँ आने वाले विदेशी यात्री
उस दफन स्थान की तारीफ करें। वह ताज-इ-मकान छह चौक
वाला बाजार था। लकड़ी न मिलने के कारण शाहजहाँ को कमानों
को ईंटों के ही आधार देने पड़े। कब्र पर जो रकम खर्च हुई उसमें
मचान का खर्चा सर्वाधिक था। कब्र का निर्माण-कार्य मेरी उप-
स्थिति में आरम्भ होकर मेरी उपस्थिति में ही समाप्त हुआ। बीस
हजार मजदूर लगातार २२ वर्ष काम करते रहे।" टॅव्हरनिए के

पूर्वोक्त कथन का इतिहासकारों ने गलत अर्थ लगाया है।
टॅव्हरनिए को भारतीय भाषाओं का अज्ञान होने के कारण वह
बाजार को ही ताजमहल समझा। उस बाजार में आने वाले विदेशी
यात्री जिस मानसिंह मंजिल को दंग होकर देखते थे उसमें शाहजहाँ
ने मुमताज को इसी उद्देश्य से दफनाया कि उस दफनस्थल का
सर्वत्र बोलबाला हो। इससे यह बात स्पष्ट है कि एक बड़ा सुन्दर
मानसिंह महल वहाँ आरम्भ से ही बना था। वास्तव में ताज-इ-
मकान (उर्फ ताजमहल यानि तेजोमहालय) यह उस इमारत का
नाम है जिसमें मुमताज की कब्र है। वह अति सुन्दर प्रेक्षणीय गुम्बद
वाली इमारत थी। ऐसा स्वयं शाहजहाँ के बादशाहनामे में वर्णन
है। तथापि एक पराए अनजान सर्राफ यात्री के नाते टॅव्हरनिए
शाहरले बाजार को ही ताज-इ-मकान समझकर उसके निकट वाली
मुमताज की कब्र विदेशी यात्रियों का मन लुभाया करती ऐसा
लिखता है। मचाण के लिए जिस शाहजहाँ को फट्टे, खम्भे आदि
प्राप्य नहीं थे वह भला संगमरमरी ताजमहल क्या बनवाएगा!
कमानों के ऊपर लगी मूर्तियाँ, संस्कृत शिलालेख आदि उतारकर
वहाँ कुरान जड़ देने के लिए कमानों को हजारों ईंटों का आधार
देना पड़ा। अत: एक प्रकार से मचाण के रूप में चौड़ी दीवार के
आकार की ईंटों की राशि तेजोमहालय के चारों ओर गुम्बद तक
खड़ी करनी पड़ी। उस पर खड़े होकर कुरान जड़ने का खर्चा मामूली
था। उसकी तुलना में हजारों ईंटों का चौड़ा उत्तुंग मचाण खड़ा
करना बड़ा खर्चीला कार्य था। अत: टॅव्हरनिए ने ठीक ही लिखा है
कि कब्र पर जितना खर्चा हुआ उसमें मचाण का खर्चा अत्यधिक
था। यदि शाहजहाँ संगमरमरी ताजमहल सचमुच बनाता तो
उसकी तुलना में मचाण का खर्चा अत्यल्प होता। ताजमहल का
निर्माण-कार्य टॅव्हरनिए की उपस्थिति में ही आरम्भ हुआ और
समाप्त हुआ ऐसा टॅव्हरनिए ने लिखा है। मुमताज सन् १६३१ के
जून में मरी। किन्तु टॅव्हरनिए भारत में पहली बार सन् १६४१ में
पहुँचा। अत: मुमताज की कब्र का कार्य टॅव्हरनिए की उपस्थिति

में आरम्भ हुआ यह टॅव्हरनिए का कथन झूठा साबित होता है। उसी प्रकार वह निर्माण-कार्य २२ वर्षों में समाप्त हुआ यह टॅव्हरनिए की टिप्पणी भी झूठी है क्योंकि टॅव्हरनिए भारत में लगातार २२ वर्ष कभी रहा ही नहीं। इसी कारण टॅव्हरनिए की टिप्पणी विश्वास योग्य नहीं है। उसका यात्रा-वर्णन गपशप और अंटसंट धौंसबाजी से भरा रहता है, उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए ऐसा इतिहासकारों का प्रकट मत ठीक ही है। हजारों मजदूर काम पर अवश्य लगे थे किन्तु वे ताजमहल के निर्माण के लिए नहीं बल्कि कब्र वाली मंजिल को छोड़कर शेष साढ़े सात मंजिली इमारतों के सैकड़ों कमरे, छज्जे, जीने, द्वार, खिड़कियाँ आदि चुनवाकर बन्द करवाने में लगे थे। इस प्रकार टॅव्हरनिए की टिप्पणी से भी यह सिद्ध होता है कि शाहजहाँ ने बना-बनाया ताजमहल जयसिंह से हड़प लिया।

२७. पीटर मंडी नाम का एक अंग्रेज पर्यटक शाहजहाँ के काल में आगरा नगर में आया था। इसने निजी संस्मरण लिखे हैं। मुमताज की मृत्यु के पश्चात् एक-डेढ़ वर्ष में ही वह विलायत को लौट गया। तथापि उसने लिखा है कि आग्रा नगर तथा आसपास प्रेक्षणीय इमारतों में मुमताज तथा अकबर के दफन-स्थल प्रेक्षणीय हैं।

२८. द लायट नाम के हालैण्ड के एक अफसर ने उल्लेख किया है कि आगरे के किले से एक मील की दूरी पर शाहजहाँ के पूर्व ही मानसिंह भवन था। शाहजहाँ के दरबारी इतिवृत्त 'बादशाहनामा' में उसी मानसिंह भवन में मुमताज को दफनाने की बात लिखी गई है।

२९. तत्कालीन फ्रेंच पर्यटक बर्निए ने लिखा है कि ताजमहल के (संगमरमरी) तहखाने में चकाचौंध करने वाला कोई दृश्य था। और उस कक्ष में मुसलमानों के अतिरिक्त किसी अन्य को प्रवेश नहीं करने देते थे। इससे स्पष्ट है कि वहाँ मयूर सिंहासन, चाँदी के द्वार, सोने के खम्भे इत्यादि थे और ऊपरले अष्टकोनी कक्ष में शिवलिंग पर पानी टपकने वाला सुवर्ण घट और संगमरमरी जालियों में जवाहरात इत्यादि थे। इतनी सारी सम्पत्ति हड़प करने

के उद्देश्य से ही तो शाहजहाँ ने मृत मुमताज को उस मानसिंह महल में ही दफनाने की धृष्टता तथा दुराग्रह किया ताकि उस बहाने उस इमारत पर कब्जा कर अन्दर की सम्पत्ति लूटी जा सके।

३०. जे० ए० मॅण्डेलस्लो ने मुमताज की मृत्यु के सात वर्ष पश्चात् Voyoges and Travels Into the East Indies नाम के निजी पर्यटन के संस्मरणों में आगरे का उल्लेख तो अवश्य किया है किन्तु ताजमहल निर्माण का कोई उल्लेख नहीं किया। टॅव्हरनिए के कथन के अनुसार २० हजार मजदूर यदि २२ वर्ष तक ताजमहल का निर्माण करते रहते तो मॅण्डेलस्लो भी उस विशाल निर्माण-कार्य का उल्लेख अवश्य करता।

३१. ताजमहल के हिन्दू निर्माण का साक्ष्य देने वाला काले पत्थर पर उत्कीर्ण एक संस्कृत शिलालेख लखनऊ के वस्तु-संग्रहालय (Museum) के ऊपरितम मंजिल में धरा हुआ है। वह सन् ११५५ का है। उसमें राजा परमर्दिदेव के मन्त्री सलक्षण द्वारा यह कहा गया है कि "स्फटिक जैसा शुभ्र इन्दुमौलीश्वर (शंकर) का मंदिर बनाया गया। (वह इतना सुन्दर था कि) उसमें निवास करने पर शिवजी को कैलास लौटने की इच्छा ही नहीं रही। वह मन्दिर आश्विन शुक्ल पंचमी, रविवार को बनकर तैयार हुआ।" ताजमहल के उद्यान में काले पत्थरों का एक मण्डप था ऐसा एक ऐतिहासिक उल्लेख है। उसी में वह संस्कृत शिलालेख लगा था ऐसा अनुमान है। उस शिलालेख को कनिंगहम ने जान-बूझकर बटेश्वर शिलालेख कहा है ताकि इतिहासज्ञों को भ्रम में डाला जा सके और ताजमहल के हिन्दू निर्माण का रहस्य गुप्त रहे। आगरे से ७० मील की दूरी पर बटेश्वर में वह शिलालेख नहीं पाया गया था। अतः उसे बटेश्वर शिलालेख कहना अंग्रेजी षड्यन्त्र है।

३२. शाहजहाँ ने ताजमहल परिसर में जो तोड़मरोड़ और हेराफेरी की उसका एक सूत्र सन् १८७४ में प्रकाशित पुरातत्व खाते (आर्किओ-लोजिकल सर्वे आफ इण्डिया) के वार्षिक वृत्त के चौथे खण्ड में पृष्ठ २१६-२१७ पर अंकित है। उसमें लिखा है कि हाल में आगरे

के वस्तुसंग्रहालय के आँगन में जो चौखुंटा काले बसस्ट प्रस्तर का स्तम्भ खड़ा है वह स्तम्भ तथा उसी की जोड़ी का दूसरा स्तम्भ, उसके शिखर तथा चबूतरे सहित कभी ताजमहल के उद्यान में प्रस्थापित थे। इससे स्पष्ट है कि लखनऊ के वस्तुसंग्रहालय में जो संस्कृत शिलालेख है वह भी काले पत्थर का होने से ताजमहल के उद्यानमण्डप में प्रदर्शित था।

गज प्रतिमाएँ

३३. ताजमहल प्रांगण में जहाँ टिकट निकाले जाते है उस बड़े चौक को हाथी चौक कहते हैं। इससे हमारा अनुमान है कि उस लाल पत्थर के विशाल द्वार के दोनों ओर बड़ी गज प्रतिमाएँ थीं जो शाहजहाँ ने नष्ट करा दीं। ऐसे गज प्रतिमाओं की शुण्डें कमान के नोक पर जुड़ी होती थीं। उसे गजलक्ष्मी कहा जाता है। Thomas Twining की Travels in India A Hundred years ago नाम की पुस्तक है। उस पुस्तक के पृष्ठ १६१ पर उल्लेख है कि नवम्बर १७९४ में Twining ताज-इ-महल के प्रांगण में पालकी से उतरा और कुछ पीढ़ियाँ चढ़कर वह (ताज-उद्यान के) भव्य द्वार पर पहुँचा। उस द्वार के सम्मुख हाथी चौक था।

३४. ताजमहल के बाहरी कमानों पर कुरान के १४ अध्याय जड़ दिये गये हैं। जब शाहजहाँ ने इतनी लिखवाई कराई तो क्या वह ताजमहल के निर्माण की बात नहीं करता? उसने वैसा कोई उल्लेख इसलिए नहीं किया कि उसने ताजमहल बनवाया ही नहीं।

३५. ताजमहल बनवाना तो दूर ही रहा, शाहजहाँ ने जहाँ-तहाँ नीले फारसी अक्षरों में कुरान जड़वाकर ताजमहल की चन्द्रमा जैसी धवल आभा मलीन कर दी। अमानत खान शिराझी ने वे फारसी अक्षर लिखे ऐसा बाहरी विशाल द्वार पर शिलालेख है। ताजमहल के संगमरमरी चबूतरे पर जो भव्य प्रवेश द्वार है उसकी चोटी पर जो कुरान की आयतें जड़ी हुई हैं उन्हें ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि वे रंग-बिरंगे टुकड़े-टाकड़ों से बाद में गढ़ दी गई हैं। यदि

शाहजहाँ स्वयं ताजमहल का निर्माता होता तो बेजोड़ भिन्न-भिन्न छटाओं के टुकड़ों से कुरान जड़वाना नहीं पड़ता।

कार्बन-१४ जांच

३६. शाहजहाँ से पूर्व बनी ताजमहल की इमारत बड़ी प्राचीन है और वह हिन्दू ग्रन्थों के आधार पर बनाई गई है यह मेरा संशोधन पढ़कर एक अमेरिकन प्राध्यापक (Marvin Mills) भारत आया था। ताजमहल के पिछवाड़े में यमुना के किनारे पर ताजमहल का एक प्राचीन टूटा हुआ लकड़ी का द्वार है उसका एक टुकड़ा वह ले गया। उस टुकड़े की उस विद्वान ने Newyork की एक प्रयोगशाला में भौतिक Carbon-14 जाँच कराई। उस जाँच में भी ताजमहल शाहजहाँ से सैकड़ों वर्ष पूर्व बनी इमारत सिद्ध हुई।

स्थापत्य के साक्ष्य

३७. मिसेस केनोयेर, ई० बी० हवेल और सर डब्ल्यू० डब्ल्यू० हण्टर जैसे प्रख्यात पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि ताजमहल हिन्दू मंदिर की प्रणाली के अनुसार ही बनाया गया है। हवेल ने लिखा है कि जावा के प्राचीन चण्डी सेवा मंदिर की रूपरेखा जैसी ही ताज की रूपरेखा है।

३८. ताजमहल के शिखर पर चार कोनों में चार छत्र और बीच में गुम्बद यह हिन्दू पंचरत्न की कल्पना है। इसी प्रकार हिन्दू परम्परा में पंचगव्य, पंचामृत, पंचपात्र, गाँव के पंच आदि होते हैं।

३९. ताजमहल के चार कोनों पर खड़े संगमरमर के चार स्तम्भ हिन्दू धार्मिक परम्परा के अंग हैं। वे रात को प्रकाश स्तम्भ व दिन को पहरेदारों के निगरानी के स्तम्भ के नाते उपयोग में लाये जाते थे। इस प्रकार के स्तम्भ प्रत्येक पूजास्थल की चतुस्सीमा निर्धारण हेतु लगाए जाते हैं। हिन्दुओं के विवाह एवं सत्यनारायण पूजा वेदी के चार कोनों पर लगाये जाने वाले चार स्तम्भ आज भी इनके साक्षी हैं। किसी पूजा-स्थान या मंगल-स्थान के चार कोनों पर स्तम्भ खड़े

करना पवित्र वैदिक प्रथा है।

४०. ताजमहल का अष्टकोणी आकार हिन्दू विशिष्टता है। हिन्दू परम्परा में आठ दिशाओं के आठ दैवी पालक नियुक्त हैं जो अष्ट-दिक्‌पाल कहलाते हैं। स्वर्ग तथा पाताल मिलाकर दस दिशा निर्देशित हो जाती हैं। किसी वस्तु या वस्तु का शिखर आकाश का निर्देश करता है तो नींव पाताल की प्रतीक होती है अत: पृष्ठ भाग पर इमारत अष्टकोणी करने से दस दिशा निर्देशित हो जाती हैं। राजा या परमात्मा का अधिकार दस दिशाओं में होता है। अत: राजा से सम्बन्धित या देवों से सम्बन्धित इमारत या तो स्वयं अष्ट-कोणी होती है या उसमें कहीं-न-कहीं अष्टकोणी आकार बनाये जाते हैं। इसी नियम के अनुसार ताजमहल का आकार आठकोना है। दिल्ली की तथाकथित जामा मस्जिद के सारे द्वार-मार्ग अष्टकोणीय हैं अत: वह भी अपहृत हिन्दू मंदिर है।

४१. ताजमहल के गुम्बद पर जो अष्टधातु का कलश खड़ा है वह त्रिशूल के आकार का पूर्ण कुंभ है। उसके मध्य दण्ड के शिखर पर नारियल की आकृति बनी है। नारियल के तले दो झुके हुए आम के पत्ते और उनके नीचे कलश दर्शाया गया है। चन्द्रकोर के आकार के कमानदार लौहदंड पर कलश आधारित है। उस चन्द्रकोर के दो नोक और उनके बीचोंबीच नारियल का शिखर मिलाकर त्रिशूल का आकार बना है। हिमालय की घाटियों में बने हिन्दू या बौद्ध मंदिरों पर ऐसे ही कलश लगे हैं। ताजमहल की चार दिशाओं में बने उत्तुंग संगमरमरी प्रवेशद्वारों के कमानों के नोकों पर भी रक्त कमलरूपी त्रिशूल अंकित हैं। असावधानी से जल्दबाजी में लोग उस त्रिशूलाकृति कलशदंड को इस्लामी चाँद कहते आ रहे हैं। गुम्बद पर चढ़कर जिन कर्मचारियों ने, उस कलशदंड का समीप से निरीक्षण किया है वे बताते हैं कि उस अष्टधातु के कलश पर 'अल्लाह' ऐसे अरबी अक्षर खुदे हैं और Taylor यह आंग्ल नाम अंकित है। यदि वह सही है तो वह कनिंगहम की हेराफेरी हो सकती है। सेना का इंजीनियर होने से कनिंगहम के टेलर नाम के

किसी इस्तक ने गुम्बद पर चढ़कर ज्वाला फेंकने वाले स्टोव उप-करण से कलश को गरम कर उस पर अल्लाह तथा Taylor यह दो नाम गढ़ दिये। ताकि लोग ताजमहल को इस्लामी इमारत ही समझें। किन्तु संगमरमरी ताजमहल के पूर्व में लाल पत्थर के आँगन में उस कलश की जो पूर्णाकृति जड़ी है उसमें अल्लाह और Taylor नाम नहीं है। इससे कनिंगहम के षड्‌यन्त्र का भेद खुल जाता है। पूर्व दिशा का वैदिक परम्परा में महत्त्व होने से पूर्वी आँगन में कलशदंड की आकृति अंकित रहना ताजमहल परिसर के हिन्दुत्व का एक और प्रमाण है।

असंगत तथा भ्रामक तथ्य

४२. संगमरमरी ताजमहल के पूर्व में तथा पश्चिम में एक जैसे दो भवन हैं। पश्चिम दिशा वाली इमारत को शाहजहाँ के समय से मुसलमान लोग मसजिद कह रहे हैं। उसमें एक भी मीनार नहीं है जबकि ताजमहल यदि कब्र हो तो उसके चार कोनों पर चार समान मीनार क्यों? ऐसे मुद्दों का लोग विचार नहीं करते और यदि पूर्ववर्ती इमारत मस्जिद नहीं है तो उसका आकार पश्चिम वाली इमारत के समान क्यों है? यदि आकार समान हो तो इमारतों का उपयोग भी समान होना चाहिए। अत: जब पूर्ववर्ती इमारत मस्जिद नहीं है तो उसके जोड़े वाली पश्चिम की इमारत भी मस्जिद नहीं हो सकती। वास्तव में दोनों भवन तेजोमहालय मंदिर की दो धर्म-शालाएँ हैं।

४३. पश्चिम वाली उस तथाकथित मस्जिद से लगभग ५० गज पर नक्कारखाना है। यदि वह इमारत मूलत: मस्जिद होती तो उसके इतने निकट नक्कारखाना नहीं बनाया जाता। यदि ताजमहल मूलत: कब्र होती तो उसमें नक्कारखाने का तो कोई काम ही नहीं। क्योंकि मृतात्मा को शान्ति की आवश्यकता होती है न कि शोर की। और नगाड़ा बजाकर मृत मुमताज को जगाने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। इसके विपरीत, हिन्दू मंदिर या महल में

नक्कारखाना होना आवश्यक है क्योंकि श्रुतिमधुर शांति भक्ति संगीत से ही प्रातः-सायं दैनंदिन हिन्दू जीवन आरम्भ होता है।

४४. केन्द्रीय अष्टकोने कक्ष में जहाँ मुमताज की नकली कब्र है (और जहाँ उससे पूर्व शिवलिंग होता था) उसके द्वार में प्रवेश करने से पूर्व प्रेक्षक दाएँ-बाएँ दीवारों पर अंकित संगमरमरी चित्रकला देखें। उसमें शंख के आकार के पत्ते वाले पौधे तथा ॐ आकार के फूल दिखेंगे। कक्ष के अन्दर संगमरमरी जालियों का जो अष्टकोना आलय बना है उन जालियों के ऊपरली किनारे में गुलाबी रंग वाले कमल जड़े है। यह सारे हिन्दू चिह्न हैं।

४५. मुमताज की नकली कब्र के स्थान पर कभी शिवजी का तेजोलिंग होता था। उसके पाँच परिक्रमा मार्ग हैं। संगमरमरी जाली के अन्दर से पहली परिक्रमा होती थी। जाली के बाहर से दूसरी परिक्रमा होती थी। तीसरी परिक्रमा उस कक्ष के बाहर से होती थी। चौथी परिक्रमा संगमरमरी चबूतरे से होती थी। पाँचवीं परिक्रमा लाल पत्थर के आँगन से की जा सकती थी।

४६. ताजमहल के गर्भगृह के द्वार ऊपरले तथा निचले कक्षों में चाँदी के थे। शिवलिंग के चारों ओर रत्नजड़ित सोने के खम्भे लगे थे। सोने के घट से शिवलिंग पर जल बिन्दुओं का अभिषेक होता रहता था। संगमरमरी जाली में रत्न जड़े होते थे। मयूर सिंहासन भी यहीं था।

इतनी सारी सम्पत्ति हड़प करने के लालच से ही शाहजहाँ ने मुमताज को ताजमहल में ही दफनाने की चाल चली। जयपुर नरेश जयसिंह मुगलों का अंकित भी था और आगरे से २५० मील दूर रहता था। आगरा तो मुगलों की राजधानी थी। अतः एकाएक घेरा डालकर जब मुगली सेना ने ताजमहल स्थित सारी सम्पत्ति हड़प करना आरम्भ किया तब जयसिंह देखता ही रह गया।

४७. शाहजहाँ के शासन काल में जो यूरोपियन प्रवासी आगरे आये थे उनमें एक अंग्रेज पीटरमंडी था। मुमताज की मृत्यु के पश्चात् केवल एक या डेढ़ वर्ष में वह इंग्लैंड वापस लौट गया। तथापि

उसने उस समय लिख रखा है कि मुमताज की कब्र के चारों ओर रत्नों से जड़े सोने के खम्भे लगे थे। इससे सिद्ध होता है कि वहाँ स्थित शिवलिंग के ऊपर जब मुमताज के नाम की कब्र बनाई गई तो शिवलिंग के चारों ओर के सोने के खम्भे कब्र के चारों ओर के खम्भे बनकर रह गये। अब वे वहाँ नहीं है। इससे स्पष्ट है कि उन्हें उखाड़कर शाहजहाँ के खजाने में जमा करा दिया गया। यदि ताजमहल २२ वर्षों में बना होता तो मुमताज की मृत्यु से एक वर्ष के अन्दर वहाँ सोने के खम्भे कैसे लगे होते ? इतने सारे धन-दौलत समेत ताजमहल का हड़प किया जाना शाहजहाँ और जयसिंह के बीच बड़े विवाद का कारण बन गया।

४८. सोने के खम्भे के आधार जहाँ जमीन में गड़े थे वहाँ कब्र के चारों ओर वे सुराख बन्द किये जाने के निशान बारीकी से देखने पर अभी भी दिख जाते हैं। उनसे पता चलता है कि वह खम्भे चौकोर लगे हुए थे।

४९. कब्र के ऊपर गुम्बद के मध्य से अष्टधातु की एक जंजीर लटक रही है। शिवलिंग पर जलसिंचन करने वाला सुवर्ण कलश इसी जंजीर से टँगा था। उसे निकालकर जब शाहजहाँ के खजाने में जमा करा दिया गया तो वह निकम्मी लटकी जंजीर भद्दी दीखने लगी। अतः गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने वहाँ एक दीप उस जंजीर में लटकवा दिया। वह दीप अभी भी वहाँ लटका हुआ है।

५०. उस घट से जो बूंद-बूंद पानी शिवलिंग पर टपकता था वह शाहजहाँ द्वारा घट हड़प होने के पश्चात् बन्द हो गया। तथापि बूंद टपकने की बात लोगों की स्मृति में बनी रही। अतः समय बीतते-बीतते कब्र के ऊपर शाहजहाँ का आँसू टपकने की बात अनजाने चल पड़ी।

५१. शाहजहाँ के आँसू गत सैकड़ों वर्ष लगातार मुमताज की कब्र पर टपकते रहने की बात एकदम असंगत एवं अविश्वसनीय है। पता नहीं लोग अनवधानी से उसे कैसे दोहराते आ रहे हैं। यदि ऐसे कोई आँसू टपकते तो कब्र के पास बैठने वाला मुजावर एक कपड़ा लेकर सर्वदा गीली जमीन पोंछता हुआ दिखाई देता। शाहजहाँ

कोई साधु, संन्यासी या योगी तो था नहीं कि उसकी आत्मा मृत्यु के पश्चात् आँसू टपकाने का चमत्कार कर सके। शाहजहाँ तो एक क्रूर अत्याचारी रंगेल बादशाह था। और एक मुद्दा यह है कि ताजमहल में एक के ऊपर एक ऐसे दो गुम्बज होने से कोई पानी अन्दर टपक ही नहीं सकता। कब्र के पास खड़े होकर अन्दर से जो गुम्बद दीखता है वह छत के ऊपर उलटी कड़ाही के समान समाप्त हुआ है। बाहर से जो गुम्बद दीखता है वह टोपी जैसा उस गुम्बद पर ढका हुआ है। जिस गुम्बद की गोलाई पर बन्दर भी नहीं ठहर सकता वहाँ शाहजहाँ की आत्मा या शाहजहाँ का भूत गुम्बद के ऊपर बैठकर मुमताज के लिए आँसू कैसे बहा सकेगा? और यदि शाहजहाँ के भूत को या आत्मा को रोना ही हो तो वह अन्य प्रेक्षकों जैसे उत्तुंग द्वार से प्रवेश कर कब्र पर सिर पटक-पटककर रोना पसन्द करेगा कि धूप तथा बरसात में फिसलाने वाले गुम्बद की गोलाई पर बैठकर रोना चाहेगा? गुम्बद में कोई छेद ही नहीं है तो आँसू टपकेंगे कैसे? और यदि कोई छेद होता भी तो वर्षा का पानी भी तो बड़ी मात्रा में अन्दर आ गिरता। सामान्य लोगों के भोलेपन का यह एक लाक्षणिक उदाहरण है। कही-सुनी बातों की छानबीन किए बिना उन्हें मान लेने की लोगों की आदत होती है।

५२. कहते हैं कि किसी कारीगर ने क्रुद्ध होकर गुम्बद पर हथौड़ा मारा। उस प्रहार से ऐसा जादुई छिद्र गुम्बद में हुआ कि उससे वर्ष में एक बार या प्रत्येक पौर्णिमा या अमावस्या के दिन शाहजहाँ का एक ही आँसू बराबर मध्य-रात्रि के समय मुमताज की कब्र के ऊपर टपकता था। क्रोध में किये प्रहार से गुम्बद में क्या ऐसा नपा-तुला छिद्र होगा कि जो अमावस्या या पूर्णिमा के दिन आकाश में बादल नहीं भी हों तो भी एक बूंद अवश्य टपकायेगा। गनीमत यह है कि उस धौंस को दोहराने वाले व्यक्ति यह नहीं कहते कि शाहजहाँ का आँसू कब्र में धरे मुमताज के शरीर के किस भाग पर गिरता है। हथौड़े से गुम्बद में छिद्र किए जाने की बात जो करते हैं वे यह नहीं जानते कि गुम्बद की दीवार १३ फीट मोटी है। एक या दो बार

हथौड़ा मारने से उसमें छेद नहीं हो सकता। और जब शाहजहाँ द्वारा ताजमहल के लिए पानी जैसा पैसा बहाया गया ऐसी बात कही जाती है तो किसी कारीगर के नाराज होने का प्रश्न ही नहीं था। यदि कोई कारीगर क्रुद्ध भी हुआ तो विवाद करने के लिए वह बादशाह तक पहुँच ही नहीं सकता और यदि विवाद हुआ भी तो बादशाह नीचे बगीचे में और नाराज कारीगर ऊपर गुम्बद पर हथौड़ा मारने पर तुला हुआ इतनी दूरी पर से होना असम्भव है। जहाँ तक आँसू टपकने की बात है हम पहले ही बता चुके हैं कि शिवलिंग के ऊपर टपकने वाला जल शाहजहाँ ने जब से बन्द कराया तब से मुसलमानों ने शाहजहाँ का आँसू टपकाने की बात चला दी।

मनगढ़न्त शाहजानी कथा में दूसरी धौंस यह दी जाती है कि ताजमहल बहुत लुभावना बना है ऐसा दीखने पर वे कारीगर अन्य किसी के लिए उतना सुन्दर ताजमहल न बना पाएँ इस हेतु शाहजहाँ ने उनके हाथ कटवाए। कारीगरों के हाथ कटने की घटना तो सही है किन्तु उसे जो प्रेम का रंग चढ़ाया गया है, वह झूठा है। किसी रईस के लिए कोई कारीगर यदि एक सुन्दर वस्तु बनाते हैं तो उन कारीगरों को पारितोषित देकर सम्मानित किया जाता है। उलटा हाथ कटवाने का दण्ड देकर उन्हें अपमानित तथा अपंग बनाना घोर पाप है। सही बात तो यह थी कि ताजमहल का हिन्दू परिसर हथियाने के पश्चात् सात में से छः मंजिलों के सैकड़ों कक्ष, जीने, छज्जे, द्वार, खिड़कियाँ आदि बन्द करवाने के लिए शाहजहाँ को हजारों मजदूरों की आवश्यकता थी। शाहजहाँ कंजूस होने के कारण वह ताजमहल को कब्रस्थान में रूपान्तरित करने के लिए अपने पल्ले से एक कौड़ी भी खर्च नहीं करना चाहता था। अतः शाहजहाँ की आज्ञा से रोज मुगल सैनिक आगरा नगर में चक्कर लगाकर जो भी गरीब लोग बेकार खड़े, बैठे या घूमते दीखते, उन्हें पकड़कर ताजमहल परिसर में ला पटकते और तेजोमहालय मंदिर परिसर को कब्रस्थान में बदलने के काम पर लगा देते। उन्हें वेतन भी नहीं दिया जाता। केवल दाल-रोटी देकर काम करवा लेते।

उन पर देखरेख करने वाले मुकादम दाल-रोटी का आधा भाग छीन लेते। इस प्रकार उन मजदूरों को आधा पेट काम करना पड़ा। बाल-बच्चों के लिए वे कुछ कमा नहीं पाते थे। अत: ताजमहल को बन्द कराने का कार्य २०-२२ वर्ष शनै:-शनै: चलता रहा। ऐसी अवस्था में मजदूर लोग या तो भाग जाते या बलवा कर उठते। उनके उस विद्रोह को दबाने के हेतु शाहजहाँ ने उनके हाथ कटवाये।

अत: बूंद टपकने की तथा हाथ कटवाने की घटनाएँ तो सही हैं किन्तु उन्हें शाहजहाँ-मुमताज का जो प्रणयरंग चढ़ाया जाता है वह एक ऐतिहासिक वंचना है।

५३. उतना सुन्दर ताजमहल और किसी के लिए न बने ऐसी आशंका शाहजहाँ को आना असम्भव था। क्योंकि शाहजहाँ-मुमताज जैसे असीम प्रेम की बात कितने जोड़ों को लागू हो सकती थी? शाहजहाँ जैसे उस समय कितने लोग विधुर रहे होंगे? क्या उनके पास भी पत्नी के शव पर बहाने के लिए करोड़ों रुपयों की पूंजी थी? क्या वे इतनी पूंजी कब्र बनाने में व्यर्थ गंवाने की इच्छा या क्षमता रखते थे? और यदि कोई हरी या लाल ताजमहल से अधिक विशाल तथा सुन्दर कब्र बनाने की सोचता भी तो क्या उसे बादशाही आज्ञा से चुप कराया नहीं जा सकता था? अत: हाथ कटवाने की बात केवल ढोंग है।

उस कथा में और एक असंगति यह है कि एक तरफ तो मुमताज की मृत्यु से शोकदग्ध शाहजहाँ अति कोमलहृदयी था ऐसा ढोंग किया जाता है जबकि दूसरी ओर वही बादशाह सुन्दर मकबरा बनाने वाले कुशल कारीगरों को इनाम देने के बजाय उनके हाथ कटवाने की उलटी, क्रूर तथा दुष्ट कार्यवाही करता हुआ बताया जाता है।

५४. संगमरमरी चबूतरे के तहखाने में (जहाँ मुमताज की मूल कब्र बताई जाती है) उतरते समय पाँच-सात पीढ़ियाँ उतरने के पश्चात् एक आला-सा बना हुआ है। उसके दाएँ-बाएँ की दीवारें देखें। वे बेजोड़ संगमरमरी शिलाओं से बन्द हैं। उससे पता चलता है कि तहखाने के जो सैकड़ों अन्य कक्ष बन्द हैं उनमें पहुँचने के जीने यहाँ से

निकलते थे। वे शाहजहाँ ने बन्द करा दिए।

५५. लाल पत्थर के आँगन में जूते उतारकर जब प्रेक्षक पीढ़ियाँ चढ़कर संगमरमरी चबूतरे पर पहुँचते हैं तो उनके पैरों के आगे एक चौकोर शिला दिखेगी। उस पर पैर थपथपायें तो अन्दर से पोली-सी आवाज आएगी। अत: वह शिला यदि निकाली जाए तो खुले चबूतरे के अन्दर जो सैकड़ों कक्ष हैं उनमें उतरने के जीने दिखाई देंगे ऐसा अनुमान है। क्योंकि सात मंजली कुआँ तथा मस्जिद कही जाने वाली इमारत के छत के ऊपर भी एक डंडे से थपथपाने पर जब अन्दर से पोली आई तब वहाँ के पुरातत्वीय कर्मचारी (आर० के० वर्मा) ने वह शिला निकलवाई तो उसमें अन्दर मोटी दीवार के गहराई में उतरता हुआ एक जीना दिखा। उससे ज्यों ही अन्दर उतरने लगे तो अन्दर नागों का एक जोड़ा फन उठाये हुए दीख पड़ा। तब वर्मा जी तुरन्त वापस ऊपर लौट आए।

५६. ताजमहल में जो सात मंजली बावली महल है तथा संगमरमरी ताजमहल के दाएँ-बाएँ जो दो सात मंजली इमारतें हैं उनमें से एक मस्जिद कही जा रही है। उनमें प्राचीन पद्धति के शौचकूप उर्फ पाखाने बने हैं। वे प्रेक्षकों से छिपाये गये हैं।

५७. मस्जिद कहलाने वाली इमारत के साथ जो सातमंजिला कुआँ है उसमें जल-स्तर वाली मंजिल में खजाना रखा जाता था। इस प्रकार खजाने वाली बावली बनाना वैदिक क्षत्रिय परम्परा थी। ऐसे खजाने वाले कुएँ कई जगह होते थे। पेशवाओं का एक कुआँ ऐसा पुणे नगर में है। जल-स्तर के साथ वाली मंजिल में तिजोरियाँ होती थीं। यदि शत्रु की शरण जाना पड़ा तो तिजोरियाँ कुएँ में ढकेल दी जातीं। ताकि खजाना शत्रु के हाथ न लगे। उस परिसर को पुन: जीत लेने पर तिजोरियाँ कुएँ के सतह से निकाल ली जाती थीं। जीवित मुसलमान भी जब इतना जल प्रयोग नहीं करता तो मृत मुमताज के शव के लिए सात मंजिले कुएँ की आवश्यकता क्या थी? किन्तु ताजमहल तेजोमहालय नाम का हिन्दू मंदिर होने से उसमें बार-बार विपुल जल की आवश्यकता पड़ती थी।

मृत्यु तथा दफनाने के दिन अज्ञात

५८. यदि शाहजहाँ चकाचौंध कर देने वाले ताजमहल का वास्तव में निर्माता होता तो इतिहास में ताजमहल में मुमताज किस मुहूर्त पर, किस दिन बादशाही ठाठ के साथ दफनाई गई, उस दिन का अवश्य निर्देश होता। किन्तु जयपुर राजा से हड़प किये हुए पुराने महल में दफनाए जाने के कारण उस दिन का कोई महत्त्व नहीं है।

५९. इतना ही नहीं अपितु इतिहास में मुमताज की मृत्यु के दिन तथा वर्ष के बाबत भी घोटाला-ही-घोटाला है। उसकी मृत्यु का वर्ष अलग-अलग ग्रन्थों में सन् १६२९ या १६३० या १६३१ या १६३२ लिखा है। जिस जनानखाने में पाँच सहस्र स्त्रियाँ हों उसमें भला प्रत्येक स्त्री के मृत्यु दिन का हिसाब रहे भी कैसे? उस जनानखाने में मुमताज का महत्त्व केवल १/५००० होने से उसके लिए ताजमहल बनता तो औरों के लिए भी ताजमहलों की कतार बननी चाहिए थी।

शाहजहाँ-मुमताज प्रेम का निराधार उल्लेख

६०. क्योंकि शाहजहाँ ने मुमताज के दफनस्थान के ऊपर ताजमहल बनवाया, अतः शाहजहाँ का मुमताज पर असीम प्रेम होना ही चाहिए ऐसा उलटा निष्कर्ष इतिहासज्ञों ने आज तक निकाला। वस्तुतः मुमताज पर शाहजहाँ का अनोखा प्रेम था यह सिद्ध करने वाली एक भी कथा नहीं है जैसे तुलसीदास की पत्नी-विरह से बेचैन होने की कथा है। लैला-मजनू, रोमियो व ज्यूलियट की प्रेम कहानियाँ बाजार में मिलती हैं। उसी प्रकार शाहजहाँ-मुमताज की प्रेम कहानियाँ भी मिलनी चाहिए थी। वैसी एक भी पुस्तक कहीं भी मिलती नहीं है।

व्यय क्या हुआ?

६१. ताजमहल पर चालीस लाख रुपये खर्च हुए, ऐसा शाहजहाँ के बादशाहनामे में उल्लेख है। किन्तु उसका ब्यौरा नहीं दिया है। दो

मंजिलों में संगमरमर का फर्श तोड़कर मुमताज की दो कब्रें बनवाना, विशाल मचाण लगवाना, कुरान जड़वाना और सैकड़ों कक्ष, जीने, छज्जे आदि बन्द करवाना ऐसे कार्यों पर ४० लाख रुपया खर्च होना स्वाभाविक ही था। बादशाहनामे के उस न्यून के कारण ही अनेक मुसलमान लेखकों ने समय-समय पर ताजमहल पर खर्च की गई रकम के पचास लाख रुपयों से नौ करोड़ सत्रह लाख रुपयों तक के विविध कपोलकल्पित अनुमान लिख रहे हैं। उनमें कुछ लेखकों ने तो चार करोड़ ४५ लाख १८ हजार ७२६ रुपया, ७ आना, ६ पैसे इस प्रकार आने-पाई तक के आँकड़े भोलेभाले लोगों की आँखों में धूल झोंकने हेतु दे रखे हैं। ताजमहल जैसी विशाल इमारत के खर्चे के आँकड़े कभी नमक-मिर्ची की तरह आने-पाई में नहीं दिए जाते। खर्चे का इतना बारीक ब्यौरा देने से पाठक उस हिसाब को वास्तविक तथा विश्वास योग्य समझेंगे ऐसा लेखक का अनुमान रहा होगा। किन्तु वह अनुमान गलत सिद्ध हुआ। एक विशाल इमारत पर हुए खर्चे के काल्पनिक आँकड़े आने-पाई में देने से ही लेखक की धोखेबाजी प्रकट होती है।

ताजमहल पर जो खर्च हुआ वह सारा शाहजहाँ के खजाने से ही हुआ होगा ऐसा लोग मानकर चलते हैं, परन्तु इस सम्बन्ध में भी कुछ मुसलमान लेखकों ने कपोलकल्पित संख्याएँ लिखी हैं वे भी बड़ी विचित्र-सी है। वे लिखते हैं कि शाहजहाँ ने ताजमहल पर १,४४,१,८७,४०,६०१ रुपया खर्च किया तथा अन्य राजाओं ने २८,५०३ रुपया किया।

इससे स्पष्ट निष्कर्ष यह निकलता है कि जयपुर नरेश से जब्त किये ताजमहल को कब्र का रूप देने में जो भी खर्चा हुआ वह भी कंजूस शाहजहाँ ने सारा स्वयं न करते हुए हिन्दू राजाओं को धमकाकर उनसे वसूल किया। इस प्रकार ताजमहल का निर्माण तो दूर ही रहा, ताजमहल से शाहजहाँ ने जो अपार सम्पत्ति लूटी थी उसका नगण्य हिस्सा ही शाहजहाँ ने तेजोमहालय मंदिर को कब्र का रूप देने में लगाया।

निर्माण की अवधि

६२. ताजमहल बनवाने में कितने वर्ष लगे, इस सम्बन्ध में भी विविध लेखकों ने भिन्न-भिन्न अनुमान दे रखे हैं। वस्तुत: शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण किया ही नहीं। फिर भी ताजमहल के निर्माण में १०, १२, १३, १८ या २२ वर्ष लगे ऐसे अनुमान प्रचलित हैं। इससे विभिन्न अनुमान इसलिए प्रकट हुए कि तेजो-महालय जब्त करने के पश्चात् विविध कक्ष, जीने, छज्जे, द्वार, खिड़कियाँ बन्द करवाना, कुरान जड़वाना आदि परिवर्तन कार्य की कोई जल्दी नहीं थी। वह आराम से कई वर्ष धीरे-धीरे चलता रहा। परिवर्तन कितने करना और कब तक करना इसका कोई निश्चित लक्ष्य भी नहीं था। अतः यह परिवर्तन रुक-रुककर १०, १२, १३, १८ या २२ वर्ष भी चलते रहे। इसी कारण विविध लेखकों ने किए वे उल्लेख एक प्रकार से सही भी हो सकते हैं या कपोलकल्पित। किन्तु वह अवधि ताजमहल के निर्माण की नहीं अपितु ताजमहल के छह मंजिल बन्द करने में और उसका रंगरूप बिगाड़ने में तथा उसमें की सम्पत्ति लूटने में लगा।

वास्तुकारों के मनगढ़न्त नाम

६३. ताजमहल जैसा सुन्दर भवन किसने बनाया? इस सम्बन्ध में भी विविध इतिहासज्ञों ने अनेक वास्तुकारों के मनगढ़न्त नाम दे रखे हैं। यदि शाहजहाँ वास्तव में ताजमहल बनवाता तो प्रमुख कारीगरों के नाम दरबारी दस्तावेज में लिखे मिलते, परन्तु शाहजहाँ के दरबारी कागजों में या तत्कालीन तवारीखों में ताजमहल का नाम तक नहीं है। ताजमहल के निर्माताओं के विभिन्न कल्पित नाम इस प्रकार हैं—ईसा एफंदी या अहमद मेहंदिस या आस्तिन् द० बोर्दो नाम का कोई व्यक्ति या जेरोनिमो व्हिरोनिओ नाम को इटालवी व्यक्ति। कुछ अन्य लोग कहते हैं कि किसी कारीगर की आवश्यकता ही क्या थी जब मुमताज पर असीम प्यार करने वाला शाहजहाँ स्वयं ही इतना कुशल कलाकार था कि मुमताज पर आँसू बहाते-

बहाते शाहजहाँ के मन में ताजमहल की पूरी रूपरेखा प्रकट हो गई और उसी के अनुसार ताजमहल बनवाया गया।

नक्शे कहाँ हैं ?

६४. ताजमहल जैसी विशाल तथा सुन्दर इमारत बनवानी हो तो उसके सैकड़ों नक्शे बनवाने पड़ते हैं। वे विविध कारीगरों को बाँटे जाते हैं और उन्हीं के अनुसार इमारत बनती है। ताजमहल के बाबत जो विविध अफवाहें हैं उनमें कभी तो यह कहा जाता है कि शाहजहाँ ने स्वयं ताजमहल की रूपरेखा बनाई, कोई कहता है कि ईसा एफंदी ने जो नक्शा बनाया, वही शाहजहाँ को पसन्द आया और उसी के अनुसार ताजमहल बना। अन्य इतिहासकार कहते हैं कि ईरान, तुर्कस्थान आदि कई देशों के कारीगरों से नक्शे मँगवाकर उनमें से एक चुना गया। वह सारी कल्पनाएँ निराधार हैं क्योंकि ताजमहल का एक भी नक्शा शाहजहाँ के दरबारी दस्तावेजों में उपलब्ध नहीं है।

मजदूरी तथा सामग्री के दस्तावेज कहाँ हैं ?

६५. ताजमहल के निर्माण में २० हजार मजदूर २२ वर्ष तक काम करते रहे और विविध प्रकार की सामग्री (ईंट, पत्थर, चूना, हीरे, माणक, पन्ने इत्यादि) ढेरों में खरीदी गई इत्यादि, ब्यौरा इतिहासकार, पत्रकार तथा अध्यापक आदि दोहराते रहते हैं। तो प्रश्न यह उठता है कि २२ वर्ष तक २० हजार मजदूरों को मजदूरी दिए जाने के हिसाब, तथा सामग्री खरीदे जाने के हिसाब ये सारे कहाँ हैं? इस प्रकार का एक भी कागज शाहजहाँ के दरबारी दस्तावेजों में इसलिए उपलब्ध नहीं है क्योंकि शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया ही नहीं। शाहजहाँ ने तो बना-बनाया ताजमहल केवल हथिया लिया। अतः इतिहासज्ञ तथा उपन्यासकार, पत्रकार, कवि, नाटककार, लेखक, ग्रन्थकार आदि शाहजहाँ द्वारा ताजमहल बनवाये जाने का जो ब्यौरा देते रहते हैं वह निराधार है।

बगीचे में पवित्र हिन्दू पुष्प वृक्ष

६६. शाहजहाँ ने कब्जा करने से पूर्व ताजमहल उर्फ तेजोमहालय के
बगीचे में केतकी, जाई, जुई, चम्पा, मौलश्री, हरश्रृंगार और बेल
आदि हिन्दू महत्त्व के वृक्ष थे जिनके फल, फूल तथा पत्ते हिन्दू पूजा
विधि में प्रयोग किये जाते हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि तेजो-
महालय मूलतः हिन्दू मंदिर-महल था। यदि ताजमहल कब्रस्थान
के निमित्त बना होता तो उसमें हिन्दू धार्मिक महत्त्व के पौधे नहीं
होते। क्योंकि गले हुए मृत मानवी मृत देहों के खाद से पनपे पौधों
के फल, फूल आदि का सेवन पसन्द नहीं किया जाता। और यदि
वे पौधे शाहजहाँ की आज्ञा से लगवाए जाते तो वे आज भी होने
चाहिए थे। किन्तु वर्तमान समय में ताजमहल के उद्यान में उस
प्रकार के पौधे दिखाई नहीं देते क्योंकि शाहजहाँ ने वे उखड़वाए।

यमुना तट

६७. नदियों के किनारे हिन्दू मंदिर तथा महल बनाने की प्रथा अति
प्राचीन है। उसी के अनुसार तेजोमहालय यमुना के किनारे बना
है। जीवित मुसलमानों को भी इतना पानी नहीं लगता। अतः मृत
मुमताज की कब्र कभी नदी के समीप बनाई नहीं जाती। नदियों से
खाई की तरह इमारत की सुरक्षा भी बनी रहती है।

६८. इस्लामी प्रथा में मृतक की कब्र करना और कब्र की पूजा आदि
करना वर्जित है। मृतक को दफनाकर भूमि इस प्रकार समतल कर
देना कि दफन का कोई चिह्न ही न रहे। ऐसा मूलतः इस्लाम का
आदेश है। विविध सुल्तान, बादशाह, बेगम, नाई, धोबी, भिस्ती,
चिस्ती आदि की शानदार कब्रें और उन पर मचने वाला हल्ला-
गुल्ला इस्लामी नियमों का उल्लंघन है। जिन विशाल भवनों में
शेरशाह, हुमायूं, अकबर, जहाँगीर, मुमताज, दिलरसबानु बेगम
आदि दफनाई गई है वे सारे हड़प किये गये विशाल हिन्दू महल हैं।
उन महलों में तहखाने तथा ऊपर के मुख्य मंजिल होने से ऊपर-नीचे
एक ही व्यक्ति के नाम दो-दो कब्रें बनी हैं। जहाँ एक भी कब्र वर्जित

है वहाँ प्रत्येक मृत की दो-दो कब्रें बनाना सर्वथा बाह्य है। शिव
मंदिरों में दो स्तरों पर दो शिवलिंग होते हैं। उन दोनों को दबाने
के लिए भी दो स्तरों पर एक ही मृतक की दो-दो कब्रें बनी हैं।
उज्जैन के महाकालेश्वर तथा सोमनाथ के अहल्याबाई होलकर
द्वारा बनाये गये मंदिर में दो स्तरों पर दो शिवलिंग बने हैं। तेजो-
महालय उर्फ ताजमहल में भी उसी प्रकार दो स्तरों पर दो शिवलिंग
थे। उन्हें छुपाने के लिए ताजमहल के दो मंजिलों में मुमताज के
नाम की दो कब्रें बनी हैं। हो सकता है कि मुमताज का शव बुरहान-
पुर में ही हो और ताजमहल वाली कब्रों में अग्रेश्वर महादेव के दो
शिवलिंग ही दबे पड़े हों।

६९. ताजमहल के चारों ओर के मेहराबदार प्रवेशद्वार पूर्णतः समरूप
हैं। इस प्रकार की रूपरेखा को वैदिक स्थापत्य में चतुर्मुखी कहा
जाता है। जैसे ब्रह्माजी के चार मुख होते हैं।

गुम्बद का हिन्दू वैशिष्ट्य

७०. ताजमहल के गुम्बद में आवाज प्रतिध्वनित करने का गुण है। कब्र
में शान्ति और मौनता के स्थान पर इस प्रकार के गुम्बद का होना
बेतुकापन है। इसके विपरीत हिन्दू मंदिरों के गुम्बदों में प्रति-
ध्वनित करने का गुण होना आवश्यक है क्योंकि हिन्दू-देवताओं की
पूजा या आरती करते समय शंखों, घंटाओं एवं मृदंगों की प्रति-
ध्वनित एवं वर्धित ध्वनि से तांडव के अनुकूल नादब्रह्म निर्माण
होता है।

७१. ताजमहल के गुम्बद के शिखर पर कमलचिह्न बना हुआ है जो हिन्दू
लक्षण है। इस्लामी गुम्बद गंजा होता है। जैसे दिल्ली के चाणक्य-
पुरी में बने इस्लामी दूतावास के गुम्बद। उस गुम्बद के कटिभाग
में जो मेखला बनाई गई है वह भी कमलपटलों की है। इस प्रकार
गुम्बद का पद्मासन भी हिन्दू लक्षण है, क्योंकि हस्तकमल, चरण-
कमल, नेत्रकमल आदि वैदिक परिभाषा ही हैं।

७२. ताजमहल का प्रवेश द्वार दक्षिणाभिमुख है जब कि यदि वह मूलतः

कब्र होती तो उसका द्वार पश्चिम की ओर होना चाहिए था। मुमताज यदि सचमुच ताजमहल में दफनाई गई होती तो उसकी आत्मा वहाँ पश्चिम द्वार न होने से वहीं तड़पती होती।

मुर्दे का टीला कब्र कहलाती है न कि भवन

७३. मुर्दे के दफन स्थान पर जो पत्थर या ईंटों का छोटा टीला बना होता है उसे कब्र कहा जाता है न कि किसी भवन को। यह तत्त्व पाठक अवश्य ध्यान में रखें। विश्व भर में यह तथ्य लागू है। जैसे कि ईजिप्त (मिस्र देश) के एक 'पिरामिड' में सम्राट् ट्यूटेन खॅमेन् के दफन स्थान पर कब्र के रूप में शव पाया गया। अतः आज तक के पाश्चिमात्य विद्वान समझते रहे कि ट्यूटेन खॅमेन् के दफन-स्थल पर कब्र के रूप में वह विशाल 'पिरामिड' बनाया गया। वह बड़ी भारी भूल है। जब ट्यूटेन खॅमेन् का कोई महल नहीं है और मृत ट्यूटेन खॅमेन् के लिए कब्र के रूप में जिसने वह विशाल पिरामिड बनवाया ऐसा समझा जाता है उसका अपना जब कोई महल नहीं है तो मृत ट्यूटेन खॅमेन् के लिए कौन पिरामिड जैसी विशाल कब्र बनाएगा ? विविध पिरामिड तो मरुस्थल के विशाल किले हैं। मरुस्थल के तूफानों में रेत के ढेरों से छत ढक जाती है। अतः पिरामिड की दीवारें ढलान वाली बनाई गई हैं। उलटे धरे हुए यज्ञपात्र जैसा उनका आकार है। उसका मूल वैदिक है।

इस्लामी प्रथा के अनुसार मुसलमान राष्ट्रपति डॉक्टर जाकिर हुसैन यदि दिल्ली के राष्ट्रपति भवन के केन्द्रीय कक्ष में दफनाए जाते तो उनकी पुण्यतिथि पर पटना, अलीगढ़, वाराणसी आदि स्थानों से उनके सगे-सम्बन्धी दिल्ली में आकर निजी रिश्तेदारों के यहाँ ठहरते। दूसरे दिन वे कब्र पर जाने के लिए निकलकर लोगों से कब्र का रास्ता पूछते। रास्ता पूछते समय उनकी भावना होती है कि किसी मैदान में जाकिर हुसैन जो को दफनाकर उस स्थान पर एक छोटा टीला बना दिया होगा। रास्ता पूछते-पूछते दाएं-बाएं मुड़ते हुए वे किसी प्रकार राष्ट्रपति भवन के आसपास पहुँच

जाते हैं जब वे अन्तिम व्यक्ति से पूछते हैं कि 'जाकिर हुसैन जी की कब्र कहाँ है' तो उन्हें अंगुलि-निर्देश से ऊँचे गुम्बद की दिशा में इशारा करके कहा जाता है कि 'वह देखो वह जो ऊँचा गुम्बद दिख रहा है वही कब्र है'। उस उद्गार से प्रेक्षकों का मतिभ्रम होता है। निकलते समय उनकी कल्पना थी कि किसी मैदान में मृतक के दफनस्थल के ऊपर एक छोटा टीला होगा। किन्तु प्रत्यक्ष में उन्हें गुम्बद वाला विशाल विस्तृत भवन ही कब्र बताया जाता है। अतः पाठक इस बात का ध्यान रखें कि विश्व में बड़े व्यक्तियों को बड़े भवनों में दफनाया गया है। तथापि वे भवन कब्र नहीं हैं। उसके अन्दर का टीला कब्र होता हो। इस दृष्टि से ताजमहल के अन्दर मुमताज का टीला भले ही कब्र हो किन्तु उसके ऊपरला विशाल भवन तेजोमहालय नाम का प्राचीन मंदिर है। इमारत कभी कब्र नहीं होती।

७४. संगमरमरी ताजमहल की चार मंजिलें हैं। उसके तले नदीस्तर के नीचे का तहखाना मिलाकर तीन और मंजिलें लाल पत्थर की बनी हैं। इस प्रकार वह सात मंजिला भवन है, रामायण काल से राजा-रईसों के भवन सात मंजिले बनाने की प्रथा है। पुणे में पेशवाओं का शनिवार वाड़ा सात मंजिला था। अंग्रेजों ने उसे खाक कर डाला। इन्दौर में होलकरों का जूना राजवाड़ा सात मंजिला है। ताजमहल परिसर में तो और भी इमारतें सात मंजिली हैं। संगमरमरी ताज-महल के प्रति मुंह किये दाएँ-बाएँ जो दो जोड़ी के भवन हैं उनकी भी सात मंजिल हैं। जिस लाल पत्थर के भव्य प्रवेश द्वार पर टिकट प्राप्त होते हैं वह भी सात मंजिला है। यह प्रथा सर्वथा हिन्दू है।

७५. संगमरमरी चबूतरे के नीचे जो लाल पत्थर की मंजिल है उसमें यमुना प्रवाह की सीध में २२ कक्षों की कतार है। उनकी खिड़कियाँ, झरोखे आदि शाहजहाँ ने ईंटों से तथा चूने से आबड़खाबड़ बन्द करा दिए हैं। अतः अन्दर घना अँधेरा है। उनमें उतरने के दो जीने हैं। संगमरमरी चबूतरे के पीछे दाएँ-बाएँ कोनों में वे जीने देखे जा सकते हैं। प्रेक्षक उनकी १७ पौड़ी उतर भी सकते हैं। किन्तु कक्षों

में प्रवेश करने के द्वारों का पुरातत्व खाते के ताले लगे होते हैं। वह खुलवाने पर प्रेक्षक अन्दर दाखिल हो सकते हैं। उन कक्षों के दीवारों तथा छतों पर अभी कहीं-कहीं हिन्दू रंग लगा हुआ है। उन २२ कक्षों के पश्चात् अन्दरली तरफ लगभग ३२५ फीट लम्बा और ८½ फीट चौड़ा एक आला या बरामदा-सा बना हुआ है। वहाँ भी घना अँधेरा है।

मूर्तियों वाला कक्ष

७६. इस आले से और आगे अन्दर जाने के लिए दाएँ-दाएँ कोनों के पास दो द्वार बने हुए हैं किन्तु वे ईंटों से आबड़-खाबड़ चुनवा दिए गये हैं। सन् १९३२-३४ में कई व्यक्तियों ने उसमें पड़े सुराखों से अन्दर झाँका तो अनेक स्तम्भों वाला एक विशाल कक्ष दिखा। उन स्तम्भों पर मूर्तियाँ खुदी हैं। उस समय वह देखकर उन्हें बड़ी उलझन-सी हुई कि शाहजहाँ ने यदि ताजमहल बनाया तो नीचे मूर्तियाँ क्यों हैं? उस उलझन का उत्तर अब उन्हें मिला कि तेजोमहालय मूलतः मंदिर ही होने से उसमें अनेकानेक मूर्तियाँ थीं। शाहजहाँ ने उस पर कब्जा कर उसमें कब्रें ठूँस दीं और द्वारे के कमानों पर कुरान की आयतें जड़ दीं।

ताजमहल के सातों मंजिलों के सैंकड़ों कक्ष यदि खुलवा दिए गये तो हो सकता है उनमें से कई देवमूर्तियाँ तथा संस्कृत शिलालेख प्राप्त हों। सात मंजिले कुएँ से खारा जल निकालकर देखना आवश्यक है क्योंकि उसके तल में भी ऐसे कुछ प्रमाण छुपे पड़े हो सकते हैं।

ताजमहल में देवमूर्तियाँ पाई गई हैं

७७. सन् १९५२ के आसपास जब एस० आर० राव ताजमहल पर पुरातत्व अधिकारी नियुक्त थे, ताजमहल की एक दीवार में एक लम्बी-चौड़ी दरार दिखाई दी। कारीगरों को बुलाकर मरम्मत आरम्भ हुई। आसपास की और ईंटें निकालने की आवश्यकता पड़ी। वे ईंटें

निकलते ही अष्टवसु की मूर्तियाँ बाहर दिखाई पड़ने लगीं। तुरन्त मरम्मत रुकवाकर दिल्ली के पुरातत्व प्रमुख से मार्गदर्शन माँगा गया। उस अधिकारी ने शिक्षामन्त्री अबुल कलाम आजाद से पूछा। उन्होंने प्रधानमन्त्री नेहरू से पूछा। तब निर्णय यह हुआ कि मूर्तियाँ जहाँ से निकली हैं वहीं बन्द करवा दी जाएँ। दीवार में दरार पड़ने का कारण भी यही था कि शाहजहाँ के समय में उस दीवार की ईंटें निकालकर उसमें मूर्तियाँ ठूँस दी गई थीं।

उस घटना के कुछ वर्ष पश्चात् टी० एन० पद्मनाभन जब ताजमहल पर पुरातत्व अधिकारी थे तो उन्हें ताजमहल में विष्णु की मूर्ति प्राप्त हुई थी। किन्तु कनिंघम के समय से पुरातत्व खाता समय-समय पर प्राप्त होने वाले ऐसे प्रमाणों को प्राप्ति स्थानों से दूर कहीं ले जाकर छुपाता रहा है।

शाहजहाँ ने जब तेजोमहालय मंदिर हथिया लिया तब उसने सारी मूर्तियाँ निकलवाकर दीवारों में या भूमि में दबवा दीं।

शाहजहाँ से पूर्व ताजमहल के उल्लेख

७८. ताजमहल के मूल निर्माण के सम्बन्ध में प्रकट सार्वजनिक रूप से पूरी प्रकट जाँच होना आवश्यक है। तथापि अब तक जो प्रमाण प्राप्त हैं उनसे ऐसा लगता है कि सन् ११५५ ईसवी के आश्विन शुक्ल पंचमी रविवार के दिन यह तेजोमहालय शिवमंदिर राजा परमर्दिदेव के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ। अतः मुहम्मद गोरी से कई मुसलमान आक्रामकों ने ताजमहल के द्वार आदि तोड़-कर उसे लूटा। तथापि प्रत्येक हमले के पश्चात् सोमनाथ की तरह हिन्दू लोग नये द्वार आदि लगवाकर तथा मूर्तियों की पुनर्स्थापना कर तेजोमहालय को ठीक-ठाक करते रहे। उस कड़ी में शाहजहाँ अन्तिम इस्लामी आक्रामक था जिसने तेजोमहालय शिव मंदिर को कायम इस्लामी कब्रस्थान ही बना छोड़ा।

७९. Akbar the Great Moghul नाम के ग्रन्थ में लेखक Vincent Smith ने उल्लेख किया है कि "बाबर का साहसी जीवन

सन् १५३० में आगरा नगर स्थित उसके उद्यान महल में समाप्त हुआ।" वह उद्यानमहल ताजमहल ही है।

८०. बाबर की कन्या गुलबदन बेगम ने 'हुमायूननामा' शीर्षक का इतिहास लिखा है। उसमें ताजमहल का उल्लेख गूढ़ रहस्यपूर्ण 'महल' के नाम से किया गया है, क्योंकि ताजमहल में ॐ, शंख, नाग, त्रिशूल, देवमूर्तियाँ आदि अनेक आध्यात्मिक चिह्नों की भरमार थी।

८१. स्वयं बाबर के लिखे बाबरनामे में लिखा है कि इब्राहीम लोदी से जीते हुए आगरा स्थित महल में बाबर ने ईद मनाई। "उस महल का एक केन्द्रीय अष्टकोना कक्ष है और चारों कोनों पर मीनारें हैं।" यह सारे ऐतिहासिक इस्लामी उल्लेख शाहजहाँ से १०० वर्ष पूर्व के हैं। किसी भी तत्कालीन इस्लामी तवारीख में उस इमारत को तेजोमहालय उर्फ ताजमहल इसलिए नहीं कहा है कि इस्लामी आक्रामक हिन्दू नामों का तीव्र तिरस्कार करते थे।

८२. ताजमहल परिसर ३८-४० एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। उसकी दीवारें उत्तर में नदी के पार और पश्चिम में विक्टोरिया बाग में भी बनी हुई देखी जा सकती हैं। उन दीवारों के अन्त में अष्टकोने कक्ष बने हुए हैं। मृतक की कब्र के लिए सैंकड़ों कक्षों वाला इतना विशाल परिसर बनाना हास्यास्पद है।

८३. यदि ताजमहल मुमताज की कब्र के लिए बनाया जाता तो उस परिसर में सरहंदी बेगम, फतेपुरी बेगम, सातुन्निसा खानम और एक [illegible] आदि की कब्रें नहीं होतीं और न ही होनी चाहिए थीं। सरहंदी बेगम तथा फतेपुरी बेगम दोनों मुमताज के समान रानियाँ होते हुए भी दरबानों की तरह वे बाहर हाथी चौक में दफनाई गई हैं जबकि मुमताज बड़ी शान से केन्द्रीय गुम्बद के नीचे दफनाई हुई है। यह इसी कारण हुआ कि एक हिन्दू मंदिर को किसी प्रकार लूटकर नाकाम कर उसे इस्लामी कब्रस्थान बनाना मूल उद्देश्य था। अतः जिस समय जो शाही महिला मरी उसे ताजमहल परिसर में जो भी रिक्त कोना दिखा उसमें दफना दिया गया।

८४. मुमताज से विवाह होने से पूर्व शाहजहाँ के कई अन्य विवाह हुए थे। उसी प्रकार मुमताज से विवाहबद्ध होने के पश्चात् भी शाहजहाँ के और कई विवाह हुए थे। अतः मुमताज की मृत्यु पर उसकी कब्र के रूप में एक अनोखा खर्चीला ताजमहल बनवाए जाने का कोई कारण ही नहीं था।

८५. मुमताज किसी सुल्तान या बादशाह की कन्या न होने के कारण उसे किसी विशेष प्रकार के भव्य महल में दफनाने का कोई प्रश्न ही नहीं था।

८६. आगरे से ६०० मील दूर बुरहानपुर में मुमताज की मृत्यु हुई थी। वहाँ उसे दफनाया भी गया। पुरातत्व विभाग के अनुसार बुरहानपुरवा में मुमताज की कब्र ज्यों-की-त्यों बनी हुई है अतः उसके नाम से आगरे में जो दो कब्रें बनी हैं वे दोनों नकली होनी चाहिए और उनके अन्दर शिवलिंग ही दफनाए गये होंगे।

८७. बुरहानपुर से मुमताज का शव आगरे लाने का ढोंग इस कारण किया गया था कि मुमताज को दफनाने के बहाने राजा जयसिंह पर दबाव डालकर तेजोमहालय पर कब्जा करना और उसमें धरी हुई सारी सम्पत्ति लूट लेना।

८८. जिस शाहजहाँ ने जीवित मुमताज के निवास या विहार के लिए एक भी महल नहीं बनवाया वह मृत मुमताज के शव के लिए महल क्यों बनवाएगा? यह भी एक सोचने की बात है।

८९. शाहजहाँ के बादशाह बनने के पश्चात् ढाई-तीन वर्षों में ही मुमताज की मृत्यु हुई। इतनी कम अवधि में मुमताज की कब्र पर अनाप-शनाप खर्चा करने के लिए खजाने में धन था ही कहाँ?

९०. मुमताज के शव पर अप्रतिम महल बनवाने योग्य शाहजहाँ-मुमताज के असीम प्रेम का उल्लेख इतिहास में जरा भी नहीं है। उलटा शाहजहाँ के व्यभिचार तथा अनैतिक सम्बन्धों की घटनाएँ कई हैं। निजी कन्या जहाँनारा, तथा जनानखाने में तैनात दासियाँ और शाइस्ताखान की एक बेगम आदि से शाहजहाँ के अवैध सम्बन्ध होते थे। ऐसा स्त्रीलम्पट तथा अनाचारी व्यक्ति मुमताज की मृत्यु

पर उसकी कब्र के लिए अपार धन खर्च कर ही नहीं सकता ।

६१. शाहजहाँ बड़ा कंजूस तथा लोभी व्यक्ति था। अपने सारे विरोधियों का वध करके गद्दीनसीन होने वाला वह पहला मुगल बादशाह था। अतः किसी के दफन के लिए अपार धन बहाने वाली उदारता शाहजहाँ में नहीं थी।

६२. मुमताज पर असीम प्रेम होने के कारण ताजमहल जैसी सुन्दर कब्र का निर्माण हुआ यह निष्कर्ष मानवशास्त्र की दृष्टि से निराधार है। किसी स्त्री के लिए लैंगिक, कामुक या वैषयिक प्रेम किसी पुरुष में कर्तृत्व नहीं जगाता। वैषयिक प्रेम से तो पुरुष निर्बल, दुर्बल, उदास तथा कृति शून्य बनता है। यदि कोई युवक स्त्रियों के प्रेम में फँस जाए तो उसके माता-पिता को चिन्ता होने लगती है। वे सोचते हैं कि हमारा पुत्र तो काम से गया। इससे किसी प्रकार की आशा रखना व्यर्थ है। उसका जीवन विफल हो जाएगा। स्त्री-प्रेम में फँसा व्यक्ति साहसी भी हो तो वह या तो किसी का वध करेगा या आत्महत्या कर लेगा। उससे गौरवपूर्ण लौकिक कार्य कुछ नहीं होगा। किसी युवक को किसी युवती के प्रति अपार प्रेम देखकर कोई पिता यह नहीं कहेगा कि 'शाबाश बेटा, तुम जितने अधिक स्त्रीलम्पट बनोगे उतने ही अधिक ताजमहल बनाकर विश्व में नाम पाओगे।' अतः मुमताज पर असीम प्रेम होने के कारण शाहजहाँ द्वारा ताजमहल का निर्माण करना असम्भव बात है। ईश्वर, माता या मातृभूमि में जिसकी अपार निष्ठा या लगन हो उसके हाथों बड़े-बड़े कार्य होते हैं।

६३. सन् १९७३ के आरम्भ में ताजमहल के उद्यान में लगाए अंग्रेजों के फव्वारे बन्द पड़ गये। उनमें कुछ खराबी आ गई थी। वह दुरुस्त करने हेतु जब खुदाई की गई तो अन्दर अन्य प्राचीन फव्वारे निकले, उनका भी रुख संगमरमरी ताजमहल की दिशा में ही था।

शाहजहाँ ने ताजमहल में बड़ी लूटपाट और तोड़फोड़ मचाई, बगीचे में लगे हिन्दू पूजा वृक्ष तोड़े, छह मंजिलों के सैकड़ों कक्ष बन्द करवाने के लिए बगीचे में ईंट-पत्थर आदि के ढेर लगवाए।

उससे प्राचीन तेजोमहालय के हिन्दू फव्वारे टूट-फूटकर बन्द हो गये थे। इस कारण अंग्रेजों को नये फव्वारे लगवाने पड़े। अतः तेजोमहालय के बीचोंबीच लगे फव्वारों की परम्परा प्राचीन हिन्दू है। सारी ऐतिहासिक इमारतों में इस प्रकार की जल प्रवाह की जो नालियाँ, प्रपात, हौद आदि बने हुए हैं वे वैदिक परम्परा के अनुसार है। अरबस्थान, ईरान आदि वीरान प्रदेशों से भारत में घुसे इस्लामी हमलावरों को न तो इतना बहता पानी लगता था और न ही उन्हें सिंचाई योजना का कोई ज्ञान या अनुभव था।

६४. ताजमहल के संगमरमरी चबूतरे पर खड़े-खड़े ऊपर भी एक मंजिल दीखती है। तथापि उसमें सामान्य प्रेक्षकों को प्रवेश नहीं मिलता। उस मंजिल पर पहुँचने के लिए दाएँ-बाएँ दो जीने हैं। उन्हें पुरातत्व खाते के ताले लगे रहते हैं। ऊपर के उन कक्षों में फर्श पर और दीवारों पर जो संगमरमर लगा था वह शाहजहाँ द्वारा उखाड़ लिया गया। वह कुरानों की आयतें जड़ने के और मुमताज के नाम की दो कब्रें बनाने के काम में लाए गये। क्योंकि पाँच सौ वर्ष पूर्व हिन्दुओं ने कहाँ से संगमरमर मँगवाकर ताजमहल बनवाया यह शाहजहाँ के कर्मचारी नहीं जानते थे। संगमरमर वाली निचली मंजिल के अतिरिक्त अन्य मंजिलें तो शाहजहाँ को बन्द करवानी ही थीं ताकि ऐरे-गैरे व्यक्ति उनका कब्जा न ले सकें। उन कमरों के छत धुएँ से काले हुए पड़े हैं। चाँदी के द्वार, सोने के खम्भे आदि उखाड़ने के लिए जब शाहजहाँ के सैनिकों ने ऊपर मुकाम किया तब उन्होंने वहाँ रोटी पकाकर धुएँ से छत काला किया। इस प्रकार शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण करने के बजाए तेजोमहालय को लूटकर उसे खराब किया। इस प्रकार इतिहास में जिन इस्लामी आक्रामकों ने हिन्दुस्तान की ऐतिहासिक इमारतों को तोड़ा-फोड़ा और लूटा उनको उन इमारतों का निर्माता बतलाया जा रहा है। Destroyers have been called builders। अब भारत स्वतन्त्र हो जाने के कारण ऊपर जाने के जीने प्रेक्षकों के लिए खोल देने चाहिए। ऊपरले कक्ष छुपाने की अब कोई आवश्यकता नहीं।

९५. शाहजहाँ के समय बर्नियर नाम का एक फ्रेंच डॉक्टर आगरा नगर में आया था। उसने लिखे संस्मरणों में कहा है कि संगमरमरी तहखाने में और उसकी निचली मंजिलों में मुसलमानों के अतिरिक्त दूसरे किसी को जाने नहीं देते। कारण यह था कि अन्य मंजिलों से निकाली मूर्तियाँ शाहजहाँ ने निचली मंजिलों में ठूँसकर उन मंजिलों पर मुसलमानों का पहरा लगा दिया था।

९६. ताजमहल के पश्चिमी प्रवेश-द्वार के बाहर मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे टीले बनाकर उन पर वृक्ष लगा दिए गये हैं। प्राचीनकाल में जब तेजोमहालय परिसर के सैकड़ों कक्ष बने तब नींव की खुदाई से निकले मिट्टी के टीले वहाँ इस कारण बनाए गये कि किसी आक्रामक की चतुरंग सेना एकाएक पूरी शक्ति से हमला न कर सके। एक-एक, दो-दो सैनिकों की कतारों में ही शत्रु सेना चाहे तो आगे बढ़ सके। ऐसे विभाजित शत्रु सेना का प्रतिकार कुछ अधिक सरल हो जाता था। उन टीलों में से अनेक शाहजहाँ ने हजारों मजदूर लगवाकर उठवा दिए ताकि पूरे सवारी के साथ ताजमहल पर पहुँचना सुगम हो और ताजमहल परिसर दूर से दिखाई दे। अंग्रेज यात्री पीटर मंडी ने यह ब्यौरा लिख रखा है। उससे स्पष्ट है कि ताजमहल परिसर शाहजहाँ के पूर्व ही बना था।

९७. टॅवर्नियर नाम का फ्रेंच सर्राफ जो शाहजहाँ के समय आगरे आया था, ने लिखा है कि "मचाण लगवाने के लिए लकड़ी उपलब्ध नहीं थी इस कारण शाहजहाँ को ईंटों का ही मचाण बनवाना पड़ा। अतः कब्र पर जो खर्चा हुआ उसमें मचाण का ही खर्चा सबसे अधिक था।"

जिस शाहजहाँ को मचाण के लिए पर्याप्त लकड़ी भी उपलब्ध नहीं थी वह ताजमहल जैसी विशाल और सुन्दर इमारत कैसे बना पाता? टॅवर्नियर के उस कथन का अर्थ यह है कि बने-बनाए ताजमहल पर जब शाहजहाँ ने दीवारों पर ऊपर-नीचे कुरान की आयतें जड़ाना चाहा तो उसके लिए नीचे से ऊपर तक ईंटों की चौड़ी दीवारों का ही मचाण खड़ा करना पड़ा। कुरान जड़ाने का

खर्चा कम और मचाण का खर्चा बहुत अधिक ऐसा उलटा हिसाब बना। इसी से स्पष्ट है कि शाहजहाँ द्वारा छह मंजिलों के सैकड़ों कक्ष बन्द करवाने का और दीवारों पर कुरान की आयतें जड़ाने का ही कार्य किया गया।

९८. ताजमहल परिसर के दरवाजों को मोटी नोकदार कीलें लगी हुई हैं। हाथी द्वारा वे दरवाजे तोड़े न जा सकें अतः उन्हें कीलें लगाई जाती थीं। यदि ताजमहल कब्र होती तो उसे कील वाले द्वारों की कोई आवश्यकता नहीं थी। महल तथा मंदिरों में जहाँ अपार सम्पत्ति सुरक्षित रखनी होती थी वहीं ऐसे कीलदार द्वार लगाए जाते हैं।

९९. ताजमहल के पूर्व में खाई बनी है। ताजमहल के पीछे भी यमुना प्रवाह जल से भरे खाई का काम देता है। इस प्रकार की सुरक्षा व्यवस्था दर्शाती है कि ताजमहल मूलतः एक मामूली मकबरा नहीं अपितु एक प्रसिद्ध तेजोमहालय शिवतीर्थ था।

१००. ब्रिटिश ज्ञानकोष (Encyclopaedia Britannica) के अनुसार ताजमहल परिसर में अतिथि गृह, पहरेदारों के कक्ष, अश्वशाला इत्यादि भी हैं। मृतक के लिए इन सबकी क्या आवश्यकता?

१०१. कोई भी मकान बनाने वाला व्यक्ति अत्यन्त बारीकी से द्वार, खिड़की, जीना, छज्जे, कक्ष आदि जितने आवश्यक हों उतना ही बनवाता है। ऐसी अवस्था में मृतक के लिए ताजमहल बनवाया ही नहीं जा सकता। क्योंकि वह परिसर ३८-४० एकड़ विस्तार का है। उसमें उद्यान, तालाब, जल वितरण योजना, फव्वारे, कुआँ, कई सात मंजिली इमारतें, सैकड़ों कक्ष, गौशाला, नक्कारखाना आदि कई प्रकार की इमारतें हैं। इन किसी की मृतक को कोई आवश्यकता नहीं होती। ऐसी अवस्था में कौन ऐसे निरर्थक आडम्बर पर करोड़ों रुपये खर्च करेगा? मृतक के ऊपर लुटाने के लिए इतनी फालतू सम्पत्ति किसके पास होती है? मानवी स्वभाव से यह बात पूर्णतया विपरीत है। इसी कारण विश्व के अनेकानेक देशों में जहाँ भी विशाल इमारतों में मृतक प्रत्यक्ष दफनाए गये हों या उनके नाम की झूठी कब्रें बनाई गई हों उनके

बारे में लोगों को यह जान लेना चाहिए कि वे इमारतें मंदिर,
महल, कार्यालय, विद्यालय आदि किसी अन्य उद्देश्य से बनाई गई
थीं। सदियों पश्चात् जब वे इमारतें मुसलमानों के कब्जे में आई
तब उन्होंने उन इमारतों में किसी मुर्दे का या तो प्रत्यक्ष दफन
किया या एक नकली कब्र बना दी।

१०२. तेजोमहालय शिवतीर्थ होने के कारण उसके पीछे पश्चिम दिशा
में यमुना किनारे एक श्मशान बना है। श्मशान के डोम को
जयपुर दरबार से वेतन मिला करता था। वहाँ श्मशान का
अस्तित्व भी यह सिद्ध करना है कि तेजोमहालय शिवतीर्थ है।

१०३. ताजमहल के नदी तट वाली लाल दीवार में नौकाएँ बाँधने के
लिए लोहे की कड़ियाँ लगी हुई है। इससे यह निष्कर्ष निकलता
है कि इस पार से उस पार तक नौकाएँ चलती थीं। उसी कारण
दोनों किनारों पर कुछ घाट अभी बचे हुए है। उनसे ऐसा लगता
है कि शाहजहाँ ने तेजोमहालय के पिछवाड़े में दोनों किनारे पर
जो लम्बे-चौड़े घाट थे, वे उखड़वाए ताकि हिन्दू जनता वहाँ
स्नान, बाजार आदि के लिए आना बन्द कर दे।

१०४. शाहजहाँ काले संगमरमर का और एक ताजमहल यमुना के उस
पार बनाकर दोनों को एक पुलिया से जोड़ने वाला था ऐसी एक
अफवाह शाहजहाँ के चापलूसी सेवक उस समय यूरोप से आए
कुछ यात्रियों के कान में फूंक देते थे। जिस शाहजहाँ ने सफेद
संगमरमर का भी ताजमहल नहीं बनवाया वह काले संगमरमर
का ताजमहल कैसे बनवाता? पुलिया से जुड़े दो ताजमहलों के
बहाने शाहजहाँ-मुमताज का लैंगिक सम्भोग साकार करने की
कामुक कपोलकल्पना उस अफवाह के पीछे थी। एक मृत स्त्री के
शव के पीछे दो-दो ताजमहल बनाना क्या हँसी-मजाक की बात
थी? शाहजहाँ को मृतक के नाम ताजमहल-ही-ताजमहल बनाते
रहने के अतिरिक्त और कोई काम-धन्धा था कि नहीं? एक मृतक
स्त्री की स्मृति में यदि शाहजहाँ शाही खजाने से इतना पैसा बहाता
रहता तो उसके जनानखाने की शेष ४९९९ स्त्रियाँ रो-पीटकर

शाहजहाँ का जीना कठिन कर देतीं। शाहजहाँ तो इतना कंजूस
था कि तेजोमहालय से अपार सम्पत्ति लूटने के पश्चात् भी उस
इमारत के छह मंजिल आबड़-खाबड़ बन्द करवाने के लिए
शाहजहाँ ने हंटर मार-मारकर मजदूरों से निःशुल्क काम
करवाया, और आश्रित राजाओं से पैसे वसूल किये और जयपुर
नरेश जयसिंह से पत्थर तथा संगतराश मुफ्त माँगना चाहा। अतः
जयसिंह ने शाहजहाँ के उन पत्रों का कोई उत्तर ही नहीं दिया।

१०५. ताजमहल की दीवारों का संगमरमर हल्के केतकी छटा का है
जब कि कुरान की आयतों वाला संगमरमर सफेद दूध जैसे वर्ण
का है। यह असंगति इस कारण हुई कि ऊपरले मंजिल के कक्षों
की भूमि पर लगी संगमरमरी शिलाएँ निकलवाकर उन्हें कुरान
जड़ाने के काम में लाया गया। इतिहासज्ञों ने ऐसे बारीकी से
ऐतिहासिक इमारतों का भी निरीक्षण नहीं किया और इस्लामी
तवारीखों का भी अध्ययन नहीं किया। वे केवल इस्लामी बाजारी
अफवाहें ही दोहराते रहे। इससे सारे लोगों को एक सबक यह
सीखना चाहिए कि जो बात तर्क से सिद्ध नहीं होती उसके पक्ष में
कभी ऐतिहासिक प्रमाण मिल ही नहीं सकते।

हमने तर्क प्रस्तुत किया था कि क्या जीवित मुमताज के लिए
शाहजहाँ ने कोई महल बनाया था? नहीं। तो फिर वह मृत
मुमताज के शव के लिए भी विश्वविख्यात महल का निर्माण कर
ही नहीं सकता। हमारा दूसरा तर्क था कि दिल्ली में सफदरजंग,
हुमायूँ, लोदी सुलतान, तुगलक सुलतान, निजामुद्दीन, आदि के
बड़े-बड़े विशाल परिकोटे वाले महल रूपी मकबरे बताए जाते
है। तो वे सुल्तान-बादशाह-वजीर-फकीर आदि जब जीवित थे तो
किन महलों में रहा करते थे? यदि जीवन-भर उनका कोई महल
नहीं था तो उनके शव के लिए महल कौन बनाएगा? इस समस्या
का सही उत्तर यह है कि पांडवों से लेकर पृथ्वीराज तक चार
हजार वर्षों की लम्बी अवधि में जो महल बने थे उन्हें इस्लामी
आक्रामकों ने तोड़ते-फोड़ते जो चंद महल, किले, बाड़े आदि बच

बहादुरशाह जफर तक के मुसलमान
गये उनमें कुतुबुद्दीन से लेकर सम्पत्ति सिद्ध करने के लिए उन
रहा करते थे। उनको इस्लामी कब्रें (मुर्दों के दफनाए जाने के
महलों के अन्दर झूठी, नकली कुरान की आयतें लिखवा दी गईं।
टीले) बना दी गई और बाहर किला, बाड़ा, महल, मकबरा,
अतः इस्लामी तवारीखों में एक भी सबूत नहीं मिलता। वे सारे
मस्जिद, मजार आदि बनाने का एत्मादुद्दौला, सादतअली,
हड़प किये हुए महल हैं। हुमायूँ, उन महलों में रहते
सफदरजंग आदि हिन्दू राजाओं से जीते हुए होने के कारण हो
थे। उनकी कब्रें झूठी, नकली, धूल झोंकने वाली होने के कारण हो
उन कब्रों पर मृतक का नाम अंकित नहीं होता। इतिहास की यह
असीम हेराफेरी तर्क द्वारा ही जानी जा सकती है। उसके विरोध
में जो सबूत प्रस्तुत किए जाते हैं वे नकली, ढोंगी, झूठे सिद्ध होने
अनिवार्य है। यह हमने ताजमहल निर्माण की चर्चा के रूप में इस
पुस्तिका में प्रस्तुत किया है। ऐसी अवस्था का द्योतक मुहावरा
है—अक्ल बड़ी या भैंस।

१०६. ताजमहल के कारीगरों का नाम शाहजहाँ के दरबारी दस्तावेज
या तवारीखों में न मिलने पर अनेक लेखकों ने भिन्न-भिन्न
कपोलकल्पित नाम लिखने चालू कर दिए। उनमें एक नाम था
स्वयं शाहजहाँ का। शाहजहाँ बड़ा प्रवीण कलाकार था, ऐसी
मनगढ़न्त बात इतिहास में धूर्त लोगों ने घुसा दी। किसी ने यह
भी नहीं सोचा कि दारू, अफीम आदि [illegible]क पदार्थ तथा पाँच
हजार स्त्रियों के जनानखाने में जीव[illegible] बताने वाला शाहजहाँ
वास्तुकला कब और किससे सीखा? और सारे विश्व के कारीगरों
पर मात करने वाली प्रवीणता उसने कैसे कमाई? उसके बनाए
हुए अन्य महल कौन-कौन से हैं? अध्यापक तथा अन्य इतिहासज्ञों
को तर्क द्वारा ऐतिहासिक बातों की बार-बार जाँच-पड़ताल करने
की यह रीति अपनानी चाहिए। आज तक वह सावधानता न
बरतने के कारण सारे विश्व का इतिहास नकली, झूठा हुआ पड़ा
है। इस्लाम द्वारा निर्मित एक भी विशाल ऐतिहासिक भवन विश्व

में न होने पर भी इस्लामी वास्तुकला के ढोल इतिहास में पीटने
वाले हजारों ग्रन्थ लिखे गये हैं।

१०७. ताजमहल के पश्चिम में परकोटे के बाहर सटे हुए नौमहला
नाम के विशाल खंडहर अभी भी देखे जा सकते हैं। शाहजहाँ ने
जब जयपुर नरेश के तेजोमहालय परिसर पर हमला बोला तब
उस संघर्ष में नौमहला तोड़-फोड़ दिया गया।

१०८. ताजमहल के परकोटे में पूर्वी द्वार के निकट एक आला बना हुआ
है। वह गौशाला है। तेजोमहालय मंदिर के लिए रखी इन गौओं
को जंगल चरने जाना तथा वापस निजी निवास पर आने की
व्यवस्था परकोटे के बाहर ही की गई है। यदि ताजमहल कब्र
होता तो उसमें गौओं का क्या काम?

१०९. ताजमहल के पश्चिम में परकोटे के बाहर केसरी रंग के पत्थरों
के कई भवन एक कतार में बने हुए हैं। तेजोमहालय शिवतीर्थ के
भंडार, भंडारी, कीर्तनकार, कथाकार, पौराणिक, प्रवचनकार
आदि के निवास की वहाँ व्यवस्था थी। उन पर भी गुम्बद होने
से वह किसी ऐरे-गैरे मुसलमान की कब्र होगी ऐसी कल्पना कर
प्रेक्षक लोग उन भवनों को झाँकते तक नहीं, जब कि वे सारे
प्राचीन राजभवन के भाग हैं।

११०. हिन्दू महल तथा मंदिरों में चारों दिशाओं में द्वार रखने की प्रथा
है। तदनुसार तेजोमहालय की भी चारों दिशाओं से एक जैसी
प्रवेश द्वारों की कमानें हैं।

क्या छत्रपति शिवाजी उन बाड़ों में नजरबन्द थे?

१११. हमारा अनुमान है कि छत्रपति शिवाजी निजी ५५०-६००
सैनिकों के साथ १२ मई १६६६ से १७ अगस्त तक जब औरंगजेब
द्वारा नजरबन्द किए गये थे तो उनके निवास का प्रबन्ध उन्हीं
भवनों में था तथा निकट के ताजमहल के पीछे के यमुनाघाट पर
उन सबकी स्नान, संध्या आदि की सुविधा थी। हमारे अनुमान
का आधार यह है कि ताजमहल परिसर आगरा शहर के दक्षिण में

है। दक्षिण से आने वाले मरहठे आगरे को आते-जाते इसी स्थान पर पहुँचे। सन् १६३१ से ताजमहल के परकोटे के अन्दर का भाग तो जयपुर नरेश से हड़प कर लिया था। तथापि ताजमहल परकोटे के बाहरली इमारतें तथा ताजगंज स्थित अनेकानेक हवेलियाँ सन् १६३१ के पश्चात् जयपुर नरेश जयसिंह तथा राजकुमार रामसिंह के स्वामित्व में ही थी। अतः उन्हीं में शिवाजी महाराज तथा उनके स्वामिनिष्ठ साथियों को ठहराया गया था।

तेजोमहालय का 'श्री' द्वार

११२. हिन्दू महल तथा मंदिरों में चारों दिशाओं में द्वार रखने की प्रथा है। तदनुसार तेजोमहालय उर्फ ताजमहल के हाथी चौक की चारों दिशाओं में द्वार हैं। इनमें से तेजगंज उर्फ ताजगंज का द्वार दक्षिण दिशा में है। ताजमहल परिसर में प्रवेश करने का मुख्य द्वार यही है। क्योंकि हाथी चौक के पार तेजगंज द्वार के ठीक सामने लाल पत्थरों का बना वह सात मंजिला विशाल द्वार है जहाँ प्रवेश के टिकट बेचे जाते हैं। उस द्वार के पार बाग है और बाग के उस पार संगमरमरी ताजमहल का विशाल द्वार है। इस प्रकार तेजगंज द्वार, टिकट वाला द्वार तथा संगमरमरी द्वार सारे एक के पीछे एक सीधी रेखा में बने हुए हैं और तीनों के बीच लगभग सौ-सौ गज का अन्तर होगा। तेजगंज की जो गली तेजोमहालय के दक्षिण द्वार के निकट समाप्त हो जाती है उससे आकर आप द्वार में प्रवेश करने से पूर्व द्वार के ऊपरली तरफ देखें। वहाँ एक रिक्त ताक दिखाई देगा। उस ताक में सन् १६३१ से पूर्व गणेश की प्रतिमा होती थी। इसी कारण इसका 'श्री' द्वार यह प्राचीन नाम प्रचलित है। तथापि इस्लामी शासन काल में मुसलमान शासक 'श्री' का अर्थ न जानते हुए उस द्वार को 'श्री' उर्फ 'सीरी' उर्फ 'सीढ़ी' द्वार कहने लगे। वह नाम तथा गणेश जी का रिक्त आसन उस परिसर के हिन्दुत्व के प्रमुख प्रमाण हैं।

आनन्द वाटिकाएँ

११३. तेजोमहालय परिसर में जिलोखाना उर्फ आनन्द वाटिकाएँ बनी हुई हैं। देव दर्शन के लिए तथा बाजार से वस्तुएँ खरीदने के लिए आने वाले लोग उन वाटिकाओं में बैठकर खानपान किया करते थे। यदि मुमताज की मृत्यु से दुखी-कष्टी शाहजहाँ कब्र के रूप में ताजमहल निर्माण करता तो वह उसमें सार्वजनिक मनोरंजन की आनन्द वाटिकाएँ नहीं बनाता।

आगरे के किले में लगे शीशे

११४. आगरे के लालकिले के एक छज्जे से दूर ताजमहल उर्फ तेजोमहालय सामने स्थित है। राजपूतों के शासन में किले की दीवारों पर छोटे-छोटे गोल शीशे के टुकड़े लगाए जाते थे। उनमें तेजोमहालय का प्रतिबिम्ब पड़कर सैकड़ों टुकड़ों में उतने ही ताजमहल दीखते। इस्लामी शासन जैसा-जैसा ढीला पड़ता गया वैसे मुगल दरबार के नौकर-चाकर आदि वे शीशे खुरचकर निकालते रहे। इस प्रकार शीशमहल के शीशे नष्ट हो गये। फिर भी प्राचीनकाल में उन शीशों में तेजोमहालय उर्फ ताजमहल की प्रतिमा किस प्रकार दीखती थी उसका नमूना बतलाने के लिए सन् १९३२-३४ में पुरातत्व खाते के एक कर्मचारी इन्शाअल्लाखान ने चिकने प्लास्टिक से छज्जे के दीवार पर शीशे के कुछ छोटे टुकड़े चिपका रखे थे। उससे प्रेक्षकों को कल्पना आ जाती थी कि इस्लाम पूर्व राजपूतों के शासन में शीशमहल के शीशों में किस प्रकार सैकड़ों प्रतिमाएँ दीखती थीं।

इस्लामी परम्परा में शीशमहलों का कोई प्रयोजन नहीं होता। मुसलमानों में स्त्रियों को पर्दे में रखा जाता है। शीशमहल में विहरने वाली स्त्रियों की तो सैकड़ों प्रतिमाएँ होती हैं। जो इस्लामी परम्परा स्त्री का एक मुखड़ा भी दूसरों की नजर में न पड़े इतना बड़ा परदा बरतती है वह शीशमहल बनाकर एक ही स्त्री की सैकड़ों प्रतिमाएँ दर्शाने वाली व्यवस्था कर ही नहीं

सकती। अतः जहाँ भी शीशमहल हो, पहचान लेना चाहिए कि वह मूलतः इस्लाम द्वारा बनाई गई इमारत नहीं है। तदनुसार आगरे का लालकिला इस्लाम धर्म स्थापन होने से सैकड़ों वर्ष पूर्व बना किला है। अतः उसमें शीशमहल होता था। उन शीशों में तेजोमहालय आदि के प्रतिबिम्ब देखे जा सकते थे।

उन शीशों का अनुचित लाभ उठाकर धूर्त गाइड (स्थल-दर्शक) लोग प्रेक्षकों को धोखा देते हैं कि सन् १६५८ से १६६६ तक जब शाहजहाँ औरंगजेब द्वारा आगरे के लालकिले में नजरबन्द कर दिया गया था तब वह किले के उस उत्तुंग छज्जे में दीवार की तरफ मुँह कर बैठे-बैठे छोटे-छोटे शीशों में ताजमहल की छवि देख-देखकर आहें भरता रहता था।

यह कहानी सर्वथा कपोलकल्पित है। क्योंकि बन्दी बनाया शाहजहाँ किले के एक अंधेरे कक्ष में नीचे बन्द था। उसे ऊपर खुली हवा खाने के लिए शानदार शाही छज्जे में कभी जाने नहीं दिया जाता था तो वह शीशों में ताजमहल की छवि कैसे देखता ?

दूसरा मुद्दा यह है कि शीशमहल में शीशे के टुकड़े छत के पास दीवार के ऊपरी भाग में लगे होते हैं। उन छोटे-छोटे शीशों में प्रतिबिम्बित होने वाली छवि देखने के लिए खड़ा रहना पड़ता है और आँखों की दृष्टि तीक्ष्ण होना आवश्यक होता है। शाहजहाँ जब बन्दी बना तब वह बूढ़ा तथा रोग-जर्जर बन चुका था। उसकी कमर में पीड़ा थी। उसकी दृष्टि मंद हो चुकी थी। गर्दन टेढ़ी करके खड़े-खड़े वह छोटे शीशों में ताजमहल की बारीक प्रतिमाएँ दिन-भर ताकते रहने की अवस्था में उस समय कतई नहीं था।

तीसरा मुद्दा यह है कि जब छज्जे में आराम से बैठकर तकिये पर टेके हुए सामने पूरा ताजमहल सहजतया दिखाई देता था तो किले की दीवार की तरफ मुँह करके छोटे शीशों में ताजमहल की सूक्ष्म छवि देखने का निरर्थक प्रयास कौन किस कारण से करेगा ?

किले के शीशों में ताजमहल का प्रतिबिम्ब दीखता है। इस कारण शाहजहाँ ही ताजमहल का निर्माता होना चाहिए—यह कहाँ का तर्क है ? किले के शीशों के सामने जो भी वस्तु या वास्तु होगी वह शीशे में अवश्य दिखाई देगी। अतः राजपूत शासन से ही आगरे के लालकिले में शीशे लगे थे और तेजोमहालय इमारत भी प्राचीन काल से बनी होने के कारण उसकी छवि किले के शीशों में पुरातन काल से प्रतिबिम्बित होती रहती थी। इन्शा-अल्लाखान के पुत्र अनीश अहमद ने मुझे यह बताया कि उसके पिता ने नमूने के तौर पर चिकने प्लास्टिक पर लगे शीशों के छोटे गोल शीशे दीवारों पर चिपका दिए थे। उन्हें मुगलों शासन में लगे शीशे समझना अनुचित है। इन्शाअल्लाह के पश्चात् अनीश अहमद भी लालकिले में पुरातत्व खाते का कर्मचारी लगा था।

११५. ताजमहल के गुम्बद पर लोहे की सैकड़ों छोटी गोल कड़ियाँ लगी हैं। उन पर दीपावली जैसे पर्व पर सैकड़ों दीप रखे जाते थे।

११६. शाहजहाँ-मुमताज के असीम प्रेम के कारण ताजमहल की निर्मिति बताने वाले लोग और उनके श्रोता कल्पना कर बैठते हैं कि शाहजहाँ-मुमताज बड़ा नाजुक, दयालु, परोपकारी, कोमलहृदयी जोड़ा रही होगी। किन्तु इतिहास में तो दोनों ही दुष्ट, कंजूस, क्रूर तथा अहंकारी व्यक्ति थे, ऐसा ब्योरा मिलता है।

अन्याय, असन्तोष तथा दरिद्रता का युग

११७. पाठ्य-पुस्तकों द्वारा छात्रों को पढ़ाया जाता है कि शाहजहाँ का शासनकाल शांति का युग था। अतः उसके शाही खजाने में अपार सम्पत्ति इकट्ठी हो गई। उसी से शाहजहाँ ने दिल्ली का लाल-किला, दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरे का ताजमहल, अहमदाबाद में वर्तमान गवर्नर का निवास स्थान, आगरे के किले के अन्दर पाँच सौ इमारतें इत्यादि-इत्यादि बनवाईं। हम पाठकों को सावधान करना चाहते हैं कि ऊपर लिखे दावे सारे झूठ हैं। शाहजहाँ के शासन में समृद्धि भी नहीं थी तथा शांति भी नहीं

थी। लगभग ३० वर्ष के शासन में मुगली सेनाएँ ४८ युद्धों में तैनात थीं और कई बार इतने भयंकर अकाल पड़े कि गरीब जनता को अपने बच्चे बेचने पड़े, और कुत्ते-बिल्लियों का मांस खाना पड़ा। इन घटनाओं का ब्यौरा लेखक द्वारा लिखित 'The Taj Mahal is a Temple Palace' शीर्षक की पुस्तक में प्रस्तुत है। ताजमहल को जब्त करने से शाहजहाँ को वहाँ से मयूर सिंहासन आदि अपार सम्पत्ति एक बार अवश्य प्राप्त हुई। किन्तु इस प्रकार लूटपाट से होने वाला धन ४८ युद्धों में खर्च होता रहा।

अतः अध्यापक, प्राध्यापक, इतिहासज्ञ, ग्रन्थकार, साहित्यिक आदियों को हम सावधान करना चाहते हैं कि इतिहास की वे इस प्रकार की निर्मूल, निराधार बातों को दोहराया न करें। ध्यानपूर्वक तत्कालीन तवारीखें पढ़ने पर उन्हें पता चलेगा कि शाहजहाँ का शासन बड़ा अशान्त तथा अन्यायी था। उसमें प्रजा अधिकाधिक दरिद्र होती रही।

११८. संगमरमरी चबूतरे पर बना केन्द्रीय कक्ष अष्टकोना है। उसमें बना संगमरमरी जाली का आला भी अष्टकोना है। स्वयं ताजमहल अष्टकोना है। ऐसे अष्टकोनी भूमिका में गोल शिवलिंग ही ठीक मध्य साध सकता है। मृत मुमताज की लम्बी कब्र अष्टकोने आले में बेढंगी, बेहिसाबी प्रतीत होती है। यदि ताजमहल शाहजहाँ द्वारा बना होता तो वह अष्टकोना न बनता। वैसे भी अष्टकोना हिन्दू धार्मिक आकार है।

११९. ताजमहल देखने वाले लोग मुमताज की कब्र के पास शांतचित्त खड़े होकर ऊपर गुम्बदी छत को देखें। वहाँ उन्हें रंगीन चित्र दिखेगा। उसके मध्य में आठ दिशाओं के निदर्शक आठ बाण, उन्हें घेरे हुए १६ सर्प, उन्हें घेरे हुए ३२ त्रिशूल और उन्हें घेरे हुए ६४ कमल की कलियाँ चित्रित की हुई दिखाई देंगी। वे सारे चिह्न हिन्दू तो है ही किन्तु ८ के पहाड़े की ८-१६-३२-६४ आदि संख्याएँ भी हिन्दू परम्परा की है।

नकली दस्तावेज

१२०. ताजमहल में कब्र के पास बैठने वाले मुसलमान मुजावर फारसी में लिखा एक दस्तावेज रखा करते थे। उसका शीर्षक था 'तवारीख-ए-ताजमहल'। कुछ वर्ष पूर्व वह दस्तावेज चोरी-छुपे पाकिस्तान भेजा गया। किन्तु १९वीं शताब्दी में H. G. Kenee आदि कुछ आंग्ल अधिकारियों ने उस दस्तावेज की जाँच-पड़ताल कर उसे नकली घोषित कर दिया। नकली दस्तावेज रखने की आवश्यकता मुसलमानों को इसी कारण पड़ी कि स्वयं शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाने का दावा कहीं नहीं करा है। उलटा उसके बादशाहनामे में स्पष्ट लिखा है कि वह जयपुर नरेश से हड़प लिया गया।

१२१. ताजमहल के गुम्बद तथा मीनार पूर्णतया इस्लामी चिह्न हैं ऐसा कई लोग बड़े आग्रह से प्रतिपादन करते रहते हैं। इस्लाम का मूल सर्वप्रथम केन्द्र जो काबा है उस पर मीनार भी नहीं और गुम्बद भी नहीं है। अतः गुम्बद को इस्लामी आकार, चिह्न या प्रतीक मानना ही गलत है। ईरान, इराक, येरुशलेम, तुर्कस्थान आदि देशों में जो गुम्बद वाली इमारतें है वे इस्लाम-पूर्व की है क्योंकि इस्लाम को अभी चौदह सौ वर्ष भी पूर्ण नहीं हुए हैं। गुम्बद की निर्माण परम्परा उससे कहीं प्राचीन है। उसी प्रकार कब्र को तो एक भी मीनार की आवश्यकता नहीं होती। तो फिर ताजमहल के कोनों पर चार समान तथा समानान्तर मीनारें क्यों हैं? वे इसलिए हैं कि किसी मंगल स्थान, पूजा स्थान के वेदी के कोनों पर चार स्तम्भ बनाना यह वैदिक प्रथा है। वैदिक विवाह वेदी तथा सत्यनारायण पूजा वेदी के चारों कोनों पर चार स्तम्भ अवश्य होते हैं।

इस प्रकार गुम्बद तथा मीनारों की इस्लाम-पूर्व हिन्दू परम्परा बतलाते ही ताजमहल को इस्लामी इमारत समझने वाले लोग एकाएक निजी भूमिका बदलकर यह कहना आरम्भ कर देते है कि ताजमहल बनाने वाले कारीगर, मजदूर इत्यादि हिन्दू होने के कारण ताजमहल हिन्दू शैली का बना होगा?

ऐसा कहने से उन्होंने अपनी मूल भूमिका से पलटा खाकर एकाएक विरोधी भूमिका अपना ली इसका उन्हें जरा भी ध्यान नहीं रहता।

उन्हें यह जान लेना आवश्यक है कि ताजमहल का गुम्बद तथा मीनार पक्के हिन्दू चिह्न हैं। ताजमहल के हिन्दू निर्माण के वे ठोस प्रमाण हैं।

ऊपर दिए विवरण से पाठक समझ गये होंगे कि ऐतिहासिक इमारतों का दो प्रकार से विचार करना चाहिए—(१) उसका आकार, विस्तार, रंग, उसके ऊपर लगे चिह्न इत्यादि; (२) उसके निर्माण सम्बन्धी दिया जाने वाला ब्योरा।

ऐतिहासिक इमारतों को देखते समय इन दो बातों पर सूक्ष्म विचार करना बड़ा आवश्यक होता है। उन पर विचार करते समय जरा-सी भी कहीं असंगति प्रतीत हुई तो समझ लेना चाहिए कि उनके इतिहास में अवश्य कोई न्यून या विकृति है।

लोग ताजमहल आदि इमारतें 'देखने' जा रहे हैं ऐसा कहते तो हैं किन्तु वे 'देखने' नहीं अपितु गाइड (स्थलदर्शक) की कही केवल निराधार बातें ही सुनकर वापस लौटते हैं। क्योंकि यदि वे वास्तव में इमारत ध्यान लगाकर देखते तो इमारतों के अनेकानेक चिह्नों से उनको पता लगता कि वे इमारतें इस्लाम-पूर्व हिन्दुओं की बनाई हुई हैं। अतः प्रेक्षकों को सही अर्थ में इमारतें बारीकी से देखकर प्रत्येक मुद्दे पर गहरा विचार करना चाहिए। गाइड की कही बातों को ही सही नहीं समझना चाहिए।

ताजमहल, कुतुबमीनार आदि विश्व की ऐतिहासिक इमारतें इस्लाम द्वारा निर्मित होने की केवल अफवाह-ही-अफवाह है। जिस मुसलमान सुल्तान-बादशाह को उन इमारतों का श्रेय दिया जाता है उनके तवारीखों में उन इमारतों का उल्लेख तक नहीं है तो निर्माण का ब्योरा अंकित होना तो दूर ही रहा।

तथापि इतिहास लेखकों ने फलानी कब्र फलाने सुल्तान ने बनवाई, फलाना मकबरा फलानी बेगम ने बनवाया, फलानी मस्जिद उस बादशाह ने बनवाई ऐसा निराधार हल्ला-गुल्ला मचाकर इतिहास में इतना अन्याय और अन्धेर मचा रखा है कि जहाँ विश्व में एक भी दर्शनीय इमारत मुसलमानों की बनवाई हुई नहीं है वहाँ सैकड़ों इमारतें उन्होंने बेधड़क किसी-न-किसी मुसलमान के नाम गढ़ दीं।

कई बार तो इतिहासकारों ने ऐसा भी कह रखा है कि अनेक मुसलमान सुल्तान, बादशाह तथा बेगमों ने निजी जीवन-काल में अपने लिए या अपने बाल-बच्चों के लिए बाड़े नहीं बनवाए। किन्तु निजी प्रेत के लिए आलीशान महलों जैसी कब्रें अवश्य बनवा रखीं। क्या यह तर्कसंगत है? किसी को क्या कोई पता होता है कि वह कब और किस नगर में मरेगा? और उसकी मृत्यु के पश्चात् उसे उसी विशाल भवन में अवश्य दफनाया जाएगा इसकी भी क्या शाश्वती हो सकती है? यह अफवाह अज्ञानी इतिहासकारों ने अन्धेपन से इस कारण इतिहास में गढ़ दी कि 'कब्र' की आलीशान इमारत बनाने वाला वारिस तो उन्हें कोई दिखाई दिया नहीं तथापि भवन में कब्र तो है अतः उन्होंने अनुमान किया कि मृतक ने निजी जीवनकाल में ही दूरदृष्टि से अपने प्रेत के लिए एक महल बना रखा। ऐसे शेख-चिल्लियों की इस्लामी इतिहास में (इतिहासकारों के ऊटपटाँग कथनानुसार) कोई कमी नहीं दीखती। किन्तु उन इतिहासकारों ने यह बात नहीं सोची कि इस्लामी सुल्तान बादशाहों के घरानों में तीव्र आपसी शत्रुता रहती थी। ऐसी अवस्था में यदि कोई शेखचिल्ली अपने आसरे के लिए (निजी जीवनकाल में अन्य काम-धन्धे तथा झंझट छोड़कर) एक वैभवशाली कब्र (महल) बनाने में पल्ले के लाखों रुपये तथा समय नष्ट करने की मूर्खता करे भी तो उसके रिश्तेदार मृतक का शव चील तथा कुत्तों के आगे फेंककर स्वयं उस महल में ठाठ से रहने नहीं लगेंगे इसकी क्या शाश्वती थी?

प्रचलित इतिहासों में मुझे तो आरम्भ से अन्त तक ऐसी अनेक अतार्किक बातों की भरमार दीखती है। प्रचलित इतिहास

इस प्रकार पूर्णतया अविश्वसनीय होने से पग-पग पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। ताजमहल सम्बन्धी ऊपर दिया विवरण केवल उदाहरण मात्र समझकर पाठकों को प्रत्येक ऐतिहासिक कथन का उसी प्रकार सर्वांगीण विश्लेषण करने का अभ्यास करना आवश्यक है।

□□□

इतिहास पर खोजपूर्ण रचनाएं

पुरुषोत्तम नागेश ओक

भारत का द्वितीय संग्राम ....
अर्थात् आज़ाद हिन्द फौज की कहानी

भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय
ताज महल मन्दिर भवन है
ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है
भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग - 1
भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग - 2
आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है
दिल्ली का लाल किला लाल कोट है
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 1
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास -2
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास -3
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास -4
फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन हैं
क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखा गया है ?
हास्यास्पद अंग्रेज़ी भाषा
क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है
कौन कहता है अकबर महान था?

श्री गुरुदत्त की रचनाएं

इतिहास में भारतीय परम्पराएं
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास

पुरुषोत्तम नागेश ओक

जन्म : २ मार्च १९१७, इन्दौर (म० प्र०)
शिक्षा : बम्बई विश्वविद्यालय से एम० ए०, एल-एल० बी०
जीवन कार्य : एक वर्ष तक अध्यापन कर सेना में भर्ती।

द्वितीय विश्व युद्ध में सिंगापुर में नियुक्त। अंगरेजी सेना द्वारा समर्पण के उपरान्त आज़ाद हिन्द फौज के स्थापन में भाग लिया, सैगौन में आज़ाद हिन्द रेडियो में निदेशक के रूप में कार्य किया।

विश्व युद्ध की समाप्ति पर कई देशों के जंगलों में घूमते हुए कलकत्ता पहुँचे। १९४७ से १९७४ तक पत्रिकारिता के क्षेत्र में (हिन्दुस्तान टाइम्स तथा स्टेट्समैन में) कार्य किया तथा भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय में अधिकारी रहे। फिर अमरीकी दूतावास की सूचना सेवा विभाग में कार्य किया।

देश-विदेश में भ्रमण करते हुए तथा ऐतिहासिक स्थलों का निरीक्षण करते हुए उन्होंने कई खोजें कीं। उन खोजों का परिणाम उनकी रचनाओं के रूप में हमें मिलता है। उनकी कुछ रचनाएँ हैं – ताजमहल मन्दिर भवन है, भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें, विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय, वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास, कौन कहता है अकबर महान था?

उनकी मान्यता है कि पाश्चात्य इतिहासकारों ने इतिहास को भ्रष्ट करने का जो कुप्रयास किया है, वह वैदिक धर्म को नष्ट करने के लिए जानबूझकर किया है और दुर्भाग्यवश हमारे स्वार्थी इतिहासकार इसमें उनका सहयोग कर रहे हैं।

हिन्दी साहित्य सदन
18/28 (मार्ग 28), पंजाबी बाग पूर्वी
नई दिल्ली - 110 026